

जुलाई 2012

दादाबाजी

मूल्य: ₹ १०



अदीठ तप वह अंतिम तप कहा गया है।
हम वह अंतिम तप करते रहते हैं, आत्मा
और अनात्मा - दोनों के जोड़ पर,
फारिन डिपार्टमेन्ट (अनात्मा विभाग)
की ओर जाते ही नहीं हैं, केवल होम
डिपार्टमेन्ट (आत्मा) में ही रहते हैं।
ऐसा तप करना, वही अदीठ तप है।

तंत्री : डिम्पल महेता
वर्ष : ७, अंक : ९
अखंड क्रमांक : ८१
जुलाई २०१२

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाई-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset

Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Editor : Dimple Mehta

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ८०० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउण्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउण्ड

भारत में D.D. / M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानीपुरुष का अंतर तप

संपादकीय

शास्त्रों में हमें इस बात का उल्लेख मिलता है कि हर एक ज्ञानी, वीतराग और तीर्थकर भगवान ने जीवन में तप का पाया सिद्ध कर के आत्मानुभव की उच्चतम श्रेणी को प्राप्त कर के जीवन सार्थक किया है। उनका आयुष्य कर्म पूरा होने तक उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार से कर्मफल उदय में आते हैं। फिर वे चाहे सुख हो या दुःख, शात हो या अशात हो, पुद्गल परिणाम हो या फिर बाह्य परिवलों के आधार से हो। लेकिन उन सभी वेदनीय में खुद आत्मरूप रहकर देह से भिन्न बरतते हैं और कर्मफल के उदय में बिल्कुल भी एक नहीं हो जाते। वे सिर्फ वेदनीय को जानते रहते हैं किन्तु वेदनीय का असर बिल्कुल भी नहीं होता। ये कैसी अद्भुत दशा कहलाए!

ज्ञानियों के तप लौकिक तप से भिन्न होते हैं। उनको निरंतर अंतर तप होता है। ये तप कैसा होता है? इसका वर्णन करते हुए परम पूज्य दादा भगवान कहते हैं कि, हमें ये लौकिक या बाह्य तप बिल्कुल भी नहीं होता किन्तु हमें निरंतर अंतर तप होता है। हमारा तप किसी दुःख में परिणमित नहीं होता या किसी सुख में भी परिणमित नहीं होता। और परिणमित नहीं होता इसलिए कोई वस्तु असर नहीं करती। जगत् की सारी पौदगलिक वस्तुओं से अलग रहते हैं। स्वाद में भी परिणमित नहीं होते या दुःख-वेदना में भी परिणमित नहीं होते। लेकिन उन्हें हम सिर्फ जानते हैं। अर्थात्, निरंतर स्वपरिणाम में ही बरतते हैं। पुद्गल परिणाम या पुद्गल परिणति में कभी भी तन्मयाकार नहीं होते। केवल ज्ञाता-दृष्टा रूप होते हैं। और यह मोक्ष प्राप्ति के लिए सच्चा तप है। किसी भी संयोग में खुद के स्वरूप का भान जाए नहीं वह सच्चा तप, सूक्ष्म तप, अंतिम तप कहलाता है।

ज्ञानियों को अहंकार नहीं होता, इसलिए वे सुख-दुःख के भोक्ता नहीं बनते। उनको तो आत्मा का स्पष्टवेदन हुआ होता है, इसलिए वेदनीय को वेदते नहीं, बल्कि सिर्फ जानते हैं। खुद निरंतर ज्ञायक पद में ही होते हैं। ज्ञाता-ज्ञेय के बीच जागृत रहे, वही तप। ज्ञाता ज्ञेय नहीं हो जाए, वो ज्ञानियों का अदीठ तप। इसलिए उनको किसी भी संयोग में आत्मा का सुख आवृत्त नहीं हो जाता।

तप कब तक होता है, तो कहे केवल ज्ञान होने तक। उसके बाद तप का पाया पूरा हो जाता है। केवलज्ञान होने के बाद ऐब्सोल्यूट (पूर्ण) हो गया। ऐब्सोल्यूट को कुछ भी नहीं छूता। केवलज्ञान होने के बाद केवली-तीर्थकरों को भोगावली कर्म होते हैं, किन्तु वे असर नहीं करते। खुद वेदते नहीं लेकिन सिर्फ ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी रहते हैं।

प्रस्तुत संकलन में आत्मज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान के जीवन की विविध स्थितियों में, विविध मौकों पर, विविध संयोग में तप में तपकर वह किस प्रकार से सर्व वेदनीय से मुक्त रहे और उस समय वह खुद कौन-सी परिणति में बरतते थे ये हमें जानने मिलता है। उनको वीतराग दशा और वीतराग दशा के परिणाम के बारे में सैद्धांतिक समझ प्राप्त होती है। और उस आधार पर ज्ञानीपुरुष ज्ञान अनुभव की कैसी उच्चतम श्रेणी प्राप्त कर सकते हैं, यह दृष्टिगोचर होता है।

कभी न कभी तो अंतर तप कर के ऐसी दशा तक पहुँचे बिना हमारा भी छुटकारा नहीं है। और तभी तो जग से छूट पाएँगे और मोक्ष प्राप्त होगा न! पूर्ण दशा प्राप्त करने के ध्येय से यदि हम प्रस्तुत संकलन का अभ्यास करेंगे, तो हमें भी जीवन की विविध स्थितियों में तप का पुरुषार्थ आरंभ कर के ज्ञान-अनुभव की श्रेणियाँ पार करने में ये बहुत ही उपयोगी बनेगा।

जय सच्चिदानन्द

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

ज्ञानीपुरुष का अंतर तप

ज्ञानियों ने नवाज्ञा उणोदरी तप

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने व्रत, नियम, उपवास किए थे?

दादाश्री : हमने पूरी जिन्दगी में तप किया ही नहीं है। जो आ पड़े हों ऐसे तप हमने किए हैं। हम से तो एक उपवास भी नहीं हुआ। हाँ, पूरी जिन्दगी हमेशा तप किया था। दोनों वक्त जरूरत से कम ही खाता, हमेशा के लिए! कम ही खाता, इसलिए भीतर निरंतर जागृति रहती है। ये हमारी खोजबीन है। निरंतर उणोदरी वो हमेशा के लिए उपवास जैसा ही है।

भगवान् ने उणोदरी तप कितना सुंदर बताया है! दो भाग (हिस्से) खुराक, एक भाग पानी का और एक भाग हवा का। इस तरह चार भाग कर के भोजन कर लेना है। रोज़ चार रोटियाँ खाते हों, तो फिर दो ही खाते हैं, उसे उणोदरी तप कहते हैं। (ज्ञान होने से पहले) चोविहार (सूर्यास्त से पहले भोजन करना), उबाला हुआ पानी पीना, कंदमूल नहीं खाना, वगैरह बहुत ही ‘स्ट्रिक्टली’ (सख्त) पालन किया था।

प्रश्नकर्ता : उणोदरी तप करते हैं, तो खाना खा लेने के बाद फिर दो-तीन घंटों में ही खाने की इच्छा होती रहती है। ऐसा लगता है कि अंदर कुछ डालें (कुछ खा लें), जो मिले वो।

दादाश्री : फिर अकेला पड़ते ही कुछ फाँकने लगता है। यही देखना है न! कितनी ही खाने की चीजें पड़ी हों, फिर भी अकेले में भी उन्हें छूए नहीं,

ऐसा होना चाहिए। समय पर ही खाना है, इसके अलावा बीच-बीच में कुछ भी छूना नहीं है। बिना समय के जो खाते हैं, उसका मतलब ही नहीं है न! वो सारा मिर्नींगलेस (व्यर्थ) है। उससे तो जीभ को भी मज़ा आता है, फिर बाकी क्या रहा? नादारी निकलती है। खाने की सारी चीजें पड़ी हों फिर भी हम नहीं छूते, कुछ भी नहीं छूते।

मन के समाधान के लिए तप

बड़ौदा में मैं घर से बाहर निकलता तो मेरा सर्कल (मित्र-मंडल) ऐसा था कि किसीके घर जाऊँ तो कहते कि, ‘आज तो आप हमारे यहाँ खाना खाने बैठ जाओ। आज एकदम नये नसल के आम लाए हैं, आप खाना खाने बैठ जाओ।’ वह यों कहने लगता इसलिए फिर मैं उसे मना नहीं करता। उसके यहाँ एक पूरी और थोड़ा-सा आम का रस खा लेता था। मैं कहता, ‘तबियत ठीक नहीं है।’ यानी वहाँ पर थोड़ा-सा खा लेता। फिर दूसरी जगह जाऊँ, पहचानवाले के यहाँ, तो वह कहता, ‘आज तो आप खाना खाकर ही जाइए!’ इसलिए मैं पहले से ही कम लेता। मैं जानता था कि ऐसा होनेवाला है। इसलिए दूसरी जगह भी थोड़ा खा लेता और फिर घर आकर बा (दादाश्री की पत्नी) के साथ तो खाना ही पड़ता। वर्ना, बा बगैर खाए इंतजार करते बैठी रहती थीं! यानी कई बार मुझे तीन बार खाना पड़ता था, किन्तु सामनेवाले के मन का असमाधान नहीं हो, इसलिए खा लेता था। उनके मन को ज़रा भी दुःख नहीं हो इसलिए खा लेता।

सारे भीतरी तप किए

हम उपवास कर के भूख से पेट नहीं जलाते। भीतर के तप हैं उन्हें ही करने दो न! और फिर पेट जलाकर भी क्या काम है? रात को सो जाएँ, तब जो तप आते हैं, वही तप करने हैं, वह क्या कम है?

प्रश्नकर्ता : वे कौन-से तप आते हैं?

दादाश्री : बहुत प्रकार के तप आते हैं। खाँसी आए तो नींद नहीं आती। फलाँ हो (प्रतिकूल संजोग आए), तो दिन में भी नींद नहीं आती।

प्रश्नकर्ता : तब वहाँ किस प्रकार तप करते हैं?

दादाश्री : बस, तब अपने ज्ञान में रहते हैं, 'कुछ भी नहीं हुआ है,' ऐसे! आप सब लोग निदिध्यासन में रहते हो, हम ज्ञान में रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान में मतलब किस तरह?

दादाश्री : हमारा ज्ञान अलग होता है और आपका ज्ञान अलग होता है। हमारा जो है, वह स्पष्टवेदन होता है। इसलिए निरालंब होता है। आपका अस्पष्टवेदन होता है, इसलिए आपका अवलंबनवाला होता है, शब्द का अवलंबन कि 'शुद्धात्मा हूँ।' और हमारा अलग, उसकी तो बात ही कुछ और है।

अनुभव-दशा वहाँ तप कैसा?

प्रश्नकर्ता : स्पष्ट वेदन और अस्पष्ट वेदन, इसे ज़रा स्पष्टता से समझाइए।

दादाश्री : आप मेरे पैर छू रहे हो, तो मुझे पैर छूते हुए दिखाई दें, वह स्पष्ट। और वह जो दूर बैठा है, उसे मन में ऐसा लगता है कि 'क्या हो रहा होगा? कौन पैर छू रहा होगा?' वह अस्पष्ट। यह तो आपको दिया हुआ है न? ये क्या आपकी कर्माई का है? धीरे-धीरे कर्माई इकट्ठा करनी है। खुद कमाया नहीं है न! जिसने खुद कमाया हो, उसे प्राप्त तप को

भुगतना आता है। क्योंकि वह नियमानुसार आया होता है। हम इस रस्ते गए थे।

यह जो पत्र आया है न कि 'दादाजी, आपको गोली मारूँगा....' तो हमें कैसा तप करना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस तरह का यह पहला पत्र आया है!

दादाश्री : हाँ, पहला आया। इनाम है न, कभी-कभी ही ऐसा इनाम मिलता है।

प्रश्नकर्ता : इनाम मिला, तप आया, यह सारे शब्द ही इतने अच्छे हैं न, 'यह इनाम मिला,' ऐसा हाजिर रहे न, तो फिर तकलीफ ही नहीं रहेगी, समाधान रहेगा!

दादाश्री : ऐसा (इनाम) तो हम ढूँढ़ते हैं, लेकिन कोई कहता ही नहीं न! हम कहें कि 'हम दस हजार देंगे' फिर भी कोई ऐसा नहीं कहता। वह सोचेगा 'मेरी क्या दशा (हालत) होगी?' रूपये देने पर भी ऐसा काम नहीं करेगा। और यह तो बिना रूपये लिए करता है, तब तो इनाम ही है न? हमारी ऐसी अनुभव दशा है न, इसलिए तप भी करना नहीं पड़ता।

ज्ञानी को निरंतर अंतर तप

प्रश्नकर्ता : तो, तप नहीं हो उस दशा में कैसा होता है?

दादाश्री : वह वीतराग दशा, संपूर्ण तीर्थकर भगवान! हमें अमुक बाबत में तप होता है, हमें ऐसी छोटी-छोटी बाबतों में, हमें गालियाँ दें या इस तरह का कुछ हो, तब हमें तप नहीं होता।

हमें भी अदीठ तप करना पड़ता है, हमें हमारे अनुसार करना पड़ता है। ठेठ तक अदीठ तप करना है, मन चिढ़ जाए, बुद्धि चिढ़ जाए, फिर भी हमें देखते रहना है। उस घड़ी हमारा तप होता है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा कहते हो न कि 'हमें (दादाश्री को) निरंतर अंतर तप होता है।'

दादाश्री : हमें होता ही है। हमें निरंतर तप होता है। हमारा तप किसी दुःख में भी परिणमित नहीं होता, स्वाद में भी परिणमित नहीं होता, किसी सुख में भी परिणमित नहीं होता, ऐसा होता है। हमारा तप बहुत सूक्ष्म में होता है।

प्रश्नकर्ता : परिणमित नहीं होता यानी क्या?

दादाश्री : वस्तु हमें असर नहीं करती। इस जगत् की जो सारी वस्तुएँ हैं, वहाँ पर हम उन वस्तुओं से अलग ही रहते हैं। स्वाद में भी परिणमित नहीं होते, दुःख वेदना में भी परिणमित नहीं होते। दांत में दर्द हुआ हो, उसकी वेदना होती हो, तो उस वेदना में परिणमित नहीं होते। उसे हम जानते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपको कैसी बाबतों का तप होता है, दादाजी?

दादाश्री : अब तो लगभग नहीं होता, कभी-कभार होता है, हमारी चार डिग्री बाकी है, उतना करना पड़ता है। कभी-कभार आता है! हम कभी प्लेन में फँसे हों, जैसे की प्लेन में ठंड लगती हो, अकुलाहट होती हो, पैर अकड़ जाए, उस समय तप करना पड़ता है न?

शरीर से अन्बेरेबल हो (सहन नहीं हो), वहाँ तप करना पड़ता है। वो तो जिसकी दाढ़ में दर्द हो, उसे पता चलता है, है न?

प्रश्नकर्ता : अन्बेरेबल पेइन को बेरेबल (सहन कर सके ऐसा) करें, वह तप ही है न?

दादाश्री : उसे तप कहते हैं। शोर नहीं मचाए, क्लेश नहीं करे, किन्तु शरीर में दर्द होता रहे। उसमें हमारी दखल नहीं होनी चाहिए।

तप यानी क्या? चाहे किसी भी संयोग में, हाथ काटता हो तो भी खुद के स्वरूप का भान हटता

नहीं, वह तप। उस घड़ी हृदय में तपिश होती है, फिर भी उस घड़ी तप करना है।

मोक्ष का चौथा पाया, वह तप

ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह दर्शन, वह खुद की श्रद्धा में है। ('मैं' और 'चंदू') ये दोनों एकाकार नहीं हो जाएँ, वह चारित्र कहलाएँ और एक नहीं होने में जो कष्ट पड़े, उस घड़ी जो तप करना पड़े, उसे तप कहते हैं।

चौथा पाया (स्तंभ), उसे तप कहा। और लोग बाहरी तप को तप समझ बैठे हैं। जो तप बाहर दिखते हैं, वे तप तो मोक्ष में काम ही नहीं आएँगे। बाहर जितने भी तप दिखते हैं, हम समझते हैं कि महाराज तप करने बैठे हैं, लेकिन ऐसा तप नहीं। उन सबका फल तो पुण्य मिलेगा और मोक्ष में जाने के लिए तो अंतर तप चाहिए। अदीठ तप।

अदीठ तप (अंतर तप) मुझमें दिखेगा नहीं, लेकिन यों भीतर तप चलता ही रहता है। तप कैसे करना है? जब प्रकृति को पसंद नहीं आए तब चंदूभाई बोल देते हैं। किन्तु, प्रकृति को पसंद नहीं हो, भीतर हृदय में तपिश हो रही हो, फिर भी आप शांतभाव से उसका निवारण करो, वह तप।

ज्ञानी के तप, सूक्ष्मतर तप

आपकी समझ में आती है ये बात? मेरी ये बात बहुत सूक्ष्म बात है। मैंने तप किया ही नहीं है, मैंने ज्ञन्दगी में कोई भी तप किया ही नहीं है। जो आ पड़ा, वही तप किया है। आप अभी ज्ञिड़काओं तो वहाँ हमारा तप होता है।

पथर मारे उस घड़ी हमारा तप होता है। और वही तप मैं आपको दिखाता हूँ। नो अटैक (वार नहीं करना है)। मानसिक अटैक नहीं, बाणी का अटैक नहीं, देह का अटैक नहीं।

मुझे इस जगत् की कोई चीज़ नहीं चाहिए,

दादावाणी

किसी चीज़ की मुझे ज़रूरत नहीं है और किसी चीज़ की मुझे भीख भी नहीं है। इसलिए लोगों को मन में ऐसा लगता है कि न जाने दादा अंदर कितना तप करते होंगे? हमें ऐसा तप ही नहीं होता, हमें तो आनंद होता है। ये तो बोझरूप लगता है, आपको जिसका मोह है, वो हमें बोझरूप लगता है। और आपको आनंद आता है। उसमें जगत् को आनंद आता है, हमें बोझरूप लगता है, इसलिए हमारा ऐसे ही निकल जाता है।

मतलब जैसे-जैसे यह सुनोगे, वैसे-वैसे आपकी समझ में आएगा। आपको कहाँ तप करना है? आप तो जहाँ तप करना होता है, वहाँ गुस्सा करते हो! दूसरों से तप करवाते हो! फिर दूसरा तप कर लेता है। समभाव से निकाल (निपटारा) कर लो न! हमें तो रात-दिन तप ही है। आपने तो तप किए ही नहीं हैं, आराम से सो गए, फिर हो गई सुबह!

एक बार हमारे यहाँ बहुत खटमल हो गए थे। तब मैं गर्दन पर से खटमल को उठाकर पैर पर रखता और हर एक को खाना खिलाकर जाने देता। उस समय ऐसी सिद्धि प्रकट हुई थी कि अंधेरे में जहाँ भी हाथ रखूँ तो हाथ खटमल पर ही जाता। तो उनको उठाकर (पकड़कर) खाना खिलाकर ही भेजता। इसलिए खटमल भी समझ गए कि यह तो ज्ञानीपुरुष हैं। फिर वे भी सयाने हो गए!

तप में तपे, दूसरों की भूल देखे बिना

मैं सांताकूङ्झ के घर में तीसरी मंजिल पर बैठा होऊँ और चाय आती, तब कभी शक्कर डालना भूल गए हों फिर भी मैं तो पी लेता और वो भी दादा के नाम पर। भीतर दादा से कहता, 'साहब, चाय में शक्कर डालिए', इसलिए दादा डाल देते! मतलब बिना शक्कर की चाय आए, तो भी पी लेते हैं, बस। हमें तो कोई दखल ही नहीं होती न! फिर उस घर का कोई व्यक्ति दौड़कर शक्कर लेकर आता। मैं कहता, 'भाई, शक्कर क्यों लाया? ये चाय के कप-

रकाबी ले जा।' तब वह कहता है, 'चाय फीकी थी, आपने शक्कर नहीं माँगी!' इसलिए चाय फीकी आए तो तप करना है। उसे पी लेना चाहिए, उनसे बिना कहे कि चाय फीकी आई है। क्योंकि, उनको खुद को पता चलेगा न! फिर हमसे कहेंगे 'चाय में शक्कर नहीं थी, भूल गई थी, तो भी आपने कुछ कहा नहीं!' तब कहें, 'आप पीते तब आपको पता तो चलता न, सिर्फ मैं ही कहाँ चाय पीनेवाला था! मैं कहूँ इसके बजाय आपको अनुभव हो तो उसमें क्या गलत है!' और फिर हम क्या करते हैं? हम कहें कि चाय मीठी है, चाय मीठी है और फिर पीएँ, तो तुरंत मीठी लगती है। साइकोलॉजिकल इफेक्ट होता है। वर्ना तो मीठी हो, तो भी फीकी लगती है।

आश्वासन से तप अधूरे

बड़ौदा में रहते थे, तब हमें तीन डिग्री बुखार हो तो भी कभी हीरा बा (दादाश्री की पत्नी) को खबर नहीं पहुँचाई कि हमें बुखार आया है। ऐसे आश्वासन से क्या फायदा? हीरा बा तो जल्दी से 'ये ले आऊँ और वो ले आऊँ और फलाँ ले आऊँ' करने लगेंगी और लोगों से कहेंगी। लोग मुझे देखने आएँगे और मुझे ही तकलीफ होगी। इससे अच्छा 'एक ना सौ दुखों का नाश करे।' लोगों से कुछ हो नहीं पाएगा और बिना मतलब की मुसीबत! फिर जो देखने आया हो, उसे हमें 'आइए' कहना पड़े, साथ में बैठना पड़े। अरे मूआ, तू ने ये दखल कहाँ से मोल ली? देखने आनेवाले को लगेगा कि मैं नहीं जाऊँगा तो उन्हें बुरा लगेगा। और मुझे लगगो कि 'अभी कहाँ से आया?' कैसे हो, ऐसा सब पूछना पड़ता है न, बिना वजह। वर्ना, हम तो अपने आप बैठे रहते हैं। हीरा बा पूछें कि, 'आपको बुखार है?' तो मैं कहूँ, 'नहीं तो, ज़रा-सा भी बुखार नहीं है।'

प्रश्नकर्ता : मान लीजिए, हाथ लगाकर देखें और कहे कि बुखार आया है, तो फिर क्या करेंगे?

दादाश्री : तो हम कहें कि 'बुखार आया है,

‘वो अभी उतर जाएगा और बाहर अभी ये बात बताने जैसी नहीं है।’ तब कहे, ‘तो फिर ठीक है।’ वर्ना हम ऐसा कहें कि अमुक चीजों का काढ़ा बनाकर ले आओ, तो बुखार उतर जाएगा। उसमें हर्ज नहीं है। लेकिन इसके बारे में ज्यादा प्रचार कर के क्या करना है? और जो लोग आएँगे, क्या वे दुःख ले लेंगे? आप जिसके साथ इसके बारे में बातें करो, वह दुःख ले लेगा क्या? इन सारे महात्माओं में से कोई मुझसे कहे कि ‘दादा, मुझे ऐसा हुआ और वैसा हुआ।’ तो मैं कहूँ कि, ‘कोई बात नहीं, मैं हूँ न।’ तो क्या मैं उसका दुःख ले लेनेवाला हूँ? लेकिन व्यक्ति को आश्वासन रहता है।

पॉजिटिव दृष्टि से आनंद अपार

मेरा पैर टूटा, तब जगत् के लोग ‘पैर टूट गया’ ऐसा कहते हैं और मैं क्या कहता हूँ कि ‘नहीं, पैर तो जुड़ रहा है।’ पैर टूटा था, वो तो बहुत पहले टूटा था! मतलब ये कुछ नया नहीं है। लोग मुझसे कहते हैं, ‘आपके पैर में फ्रेक्चर आ गया?’ नहीं भाई, टूटा तो उस दिन था, अब तो ये जुड़ रहा है। अभी जो रूपक में आया, वो तो जुड़ने की शुरूआत हुई है। और ‘फ्रेक्चर’ होना, तो अब तो वो जोड़ है। किसका जोड़? जुड़ने का जोड़ है। फ्रेक्चर हुआ उसी मिनट से अंदर जुड़ना शुरू हो गया। रूपक में टूटा, तब से ही जुड़ने की शुरूआत होती है और वास्तव में फ्रेक्चर कौन-सी मिनट से होने लगा, उसे भी हम जानते हैं। इस बात में जगत् के लोग गहरे उतर ही नहीं सकते न! ‘जुड़ने की शुरूआत’ को ही लोग कहते हैं कि ‘ये फ्रेक्चर हुआ।’ तब हम कहते हैं कि भाई, यह तो जुड़ने लगा है, उसे क्यों ‘फ्रेक्चर’ हुआ कहते हो? अब तो यह जुड़ने की शुरूआत हुई है, ये तो कन्स्ट्रक्टिव (जुड़नेवाला) है।

जब हमें फ्रेक्चर हुआ, तब सारे डॉक्टर इकट्ठे हुए, डॉक्टर कहने लगे कि इतना फ्रेक्चर हुआ तो भी इस व्यक्ति के चेहरे पर हास्य क्यों दिख रहा है? तब

दूसरे (महात्मा) डॉक्टरों ने कहा, ऐसा मत बोलना। वे ज्ञानीपुरुष हैं। ज्ञानीपुरुष हैं इसलिए हास्य दिखता है! वर्ना चेहरा ढीला होता है या तो रो रहा होता है या फिर रो पड़ेगा ऐसा दिखता है। ये हास्य तो देखो! पचास-सौ लोग तो आसपास घूम रहे हैं, इसलिए मुझसे पूछा, ‘यह क्या है? आप इतना ज्यादा सहन कर सकते हो?’ मैंने कहा, ‘सहन करना ऐसा हमें नहीं होता।’

मोक्ष चाहिए तो शूर्वीरता के साथ खेल है। शूर्वीरता यानी शूर्वीरता! ऊपर से एटमबॉम गिरे फिर भी भतर कोई असर नहीं हो, उसे शूर्वीरता कहते हैं और यदि आप शुद्धात्मा स्वरूप हो, मैंने आपको जो स्वरूप दिया है, उस स्वरूप में हो, तो कोई असर नहीं होगा।

आप अब निःशंक हो गए। अब आज्ञा में रहो। यह देह चला जाए तो भले ही चला जाए। कान काट लें तो भले ही काट लें, पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) तो दे देने का है। पुद्गल पराया है। पराई वस्तु अपने पास रहनेवाली नहीं है। वो तो जब ‘व्यवस्थित’ का टाइम (समय) आएगा, तब चली जाएगी। इसलिए ‘जब लेना हो, तब ले लेना’, ऐसा कहना है। भय नहीं रखना है। कोई लेनेवाला नहीं है। ऐसा कोई बेकार बैठा भी नहीं है कि हम कहें कि, ‘ले लो’, और वो ले लें। कोई लेनेवाला नहीं है। किन्तु इससे अपने में निर्भयता आती है। ‘जो होना है सो हो’, कहना है।

बर्ते वेदनीय के ज्ञाता के रूप में

वेदनीय दोनों प्रकार की होती है, सिर्फ शाता वेदनीय हो, ऐसा किसी को भी नहीं होता। लेकिन हमें वेदनीय वेद के रूप में होती है, जानने के रूप में होती है। फिर भी हमने एक सेकन्ड के लिए भी दुःख देखा नहीं है। चाहे देह छूटनेवाला हो या और कुछ भी हुआ हो, लेकिन हमने अशाता वेदनीय देखी नहीं है! वेद के रूप में जाना करते, जाना करते कि

दादावाणी

ऐसा-ऐसा हो रहा है। देखा जाए तो कुदरती तौर पर ही अशाता वेदनीय ज्यादा आती भी नहीं है। कभी-कभार दांत की अशाता वेदनीय आ जाती है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर दादाजी, आपको जब खाँसी आती है तब?

दादाश्री : खाँसी को तो मैं उपकारी मानता हूँ कि अच्छा हुआ। रात को जगाती है न! हमारी इच्छा होती है कि हमें रात को जागते रहना है। जितना हो सके उतना जागृत रहना है, ऐसी इच्छा होती है। और खाँसी तो जगाती है। इसलिए मैंने उसे गुणकारी माना है। जिसे हम गुणकारी मानें उसका दुःख लगता ही नहीं न! हाँ, दाढ़ में दर्द हो जाता है। हाल ही में तीन दिनों के लिए कच्छ गया था, वहाँ पर लीवर का दर्द शुरू हुआ था। तब अशाता वेदनीय उत्पन्न हुई थी, लेकिन वेदनीय को ‘मैं’ जानता रहूँ बस उतना ही।

प्रश्नकर्ता : दुःख नहीं होता?

दादाश्री : दुःख तो होता है लेकिन ‘आत्मा’ को कुछ नहीं होता। यानी ‘हम’ ‘आत्मस्वभाव’ में हों तब तक कोई असर नहीं होता। दुःख तो होता है, तीन रात तक सोया नहीं था। भीतर जागृत, घड़ीभर के लिए देह सो जाए। ‘दादा’ बैठे हुए हैं ऐसा ‘हम’ जानते रहते हैं।

स्पर्शती नहीं वेदनीय ज्ञानी को

वेदनीय तो तीर्थकरों को भी होती है, तो फिर और किसे नहीं होगी? लेकिन उन्हें अशाता कम होती है। देखो न, हमारे लिए यह महीना ऐसा आया कि दादा का एक्सिडेन्ट (अकस्मात) होने का टाइम आया, फिर एक्सिडेन्ट हुआ और मानो दीया बुझ जानेवाला हो ऐसा हो गया।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ भी होनेवाला नहीं है, दादाजी।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। जैसे हीरा बा चली गई, तो क्या इस देह को भी कभी नहीं जाना पड़ेगा? वेदनीय कौन-सी आई?

प्रश्नकर्ता : अशाता वेदनीय।

दादाश्री : लोगों को ऐसा लगता है कि हमें अशाता वेदनीय है। लेकिन वेदनीय हमें छूती नहीं, तीर्थकरों को भी नहीं छूती। हीरा बा के चले जाने पर हमें खेद (दुःख) नहीं है, हमें तो असर ही नहीं होता न!

‘ज्ञानी’ को अहंकार नहीं होता, इसलिए वो दुःख नहीं भुगतते। जब तक आत्मा का अस्पष्ट वेदन है तब तक दुःख को वेदते हैं, अर्थात् दर्दवाली दाढ़ के ज्ञाता-दृष्टा रहने के प्रयत्न में होते हैं। जबकि ‘ज्ञानीपुरुष’, कि जिन्हें आत्मा का स्पष्ट वेदन है, वे दुःख को वेदते नहीं, किन्तु सिर्फ जानते हैं। ‘स्वरूपज्ञान’ वाले को दाढ़ दर्द करती हो तो वो दुःख को भुगतता नहीं है, लेकिन उसे इसका बोझ लगा रहता है, खुद का सुख आवृत्त होता है, जब कि हमारा सुख आवृत्त नहीं होता, आता ही रहता है। लोग समझते हैं कि ‘दादा’ को अशाता वेदनीय है, किन्तु हमें वेदनीय का असर नहीं होता! व्यवहार में वेदनीय मानी जाती है।

कई लोगों को ऐसा लगता है कि हमें वेदनीय आया, किन्तु हमें तो तीस सालों से एक मिनट, एक सेकण्ड के लिए भी अशाता वेदनीय ने छुआ नहीं है! अपना विज्ञान बहुत ही अलग प्रकार का है। कई बार हम भी अमुक बाबत में दुःख से अलग नहीं रह पाते। अमुक बाबत में अलग ही होते हैं, किन्तु अमुक दुःख की बाबत में भीतर किसी जगह पर चिपका हुआ होता है। चिपका हुआ होता है, उसे हम उखाड़ते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर अधिक उपयोग रखते हैं?

दादाश्री

दादाश्री : अधिक उपयोग रखते हैं, यहाँ उपयोग रखना पड़ता है और चिपका नहीं हो तो सहज उपयोग होता है। और यही विज्ञान मैंने आपको दिया है।

कष्ट को भी नहीं माने कष्ट, वह कैसी दशा!

प्रश्नकर्ता : आपके पैर में फ्रेक्चर हुआ था, जॉन्डिस (पीलिया) हुआ था, ऐसे सारे कष्ट एक साथ आए थे। एक ही जगह पर एक ही पॉज़िशन (अवस्था) में चार महिनों तक बैठे रहना, तो यह सब टेस्ट एक्ज़ामिनेशन (परीक्षा) ही कहलाए न?

दादाश्री : यह कष्ट था ही नहीं, इसे कष्ट नहीं कहा जाता।

प्रश्नकर्ता : आपको ऐसा नहीं लगता।

दादाश्री : नहीं, दूसरों के लिए भी यह कष्ट नहीं माना जाता। क्या इसे कष्ट कहते हैं? अरे, कष्ट तो आपने देखे नहीं हैं। ब्रह्मचारीजी पत्थर पर खड़े रहकर तप करते थे और अगर उनको देखा हो तो अपने मन में ऐसा लगे कि अपने से तो एक दिन के लिए भी ऐसा नहीं हो सकता। मुझे भी लगता था न, कि यह प्रभुश्री के शिष्य ब्रह्मचारीजी ऐसा करते हैं तो प्रभुश्री कितना करते होंगे? और फिर कृपालुदेव तो क्या ही करते होंगे! लोग उनके ऊपर से मच्छरों को उड़ाकर कुछ ओढ़ाकर जाते, तो वे खुद उसे हटा देते और मच्छरों को आराम से काटने देते! सिर्फ आत्मा ही प्राप्त करना है, ऐसा ध्येय लेकर बैठे थे।

शाता वेदनीय और अशाता वेदनीय तो तीर्थकरों को भी आती हैं, किन्तु वे ज्ञान से, केवलज्ञान से जानते हैं।

भगवान महावीर को अनार्य देश में पत्थर मारें, अपमान किया और लोगों ने देखा, तो लोगों के मन में लगा कि ओहोहो! भगवान को बहुत दुःख हो रहा है। लेकिन लोग ये नहीं देखते कि,

‘वेदक’ कौन है और ‘ज्ञायक’ कौन है। वे खुद तो ज्ञायक थे।

प्रश्नकर्ता : जाने, तो फिर वेदने का रुक जाता है?

दादाश्री : नहीं, जाने यानी, तन्मयाकार नहीं हुआ और इसलिए खुद का वेदनफल नहीं मिलता, जानने का ही फल मिलता है।

प्रश्नकर्ता : वेद का अर्थ तो सिर्फ जानना होता है, लेकिन वेदन करना यानी अनुभव करना, ऐसा नहीं है?

दादाश्री : वास्तव में वेद का अर्थ वास्तव में सिर्फ जानना ही होता है। लेकिन लोग तो वेदते हैं। वेदे यानी अनुभव करते हैं, तन्मयाकार के तौर पर अनुभव करते हैं। इसलिए उसे वेदते हैं, ऐसा कहा जाता है। दर्द की जो वेदना होती है न, उस वेदना का अर्थ क्या है? उसका अर्थ अनुभव से लेकर जानने तक का है। जैसे कि, ‘हमें’ भी वेदना होती हो और इन भाईसाहब को भी वेदना होती हो, लेकिन मैं जानपने में रहता हूँ और वह वेदना में रहते हैं।

वेदक और ज्ञायक, दोनों भिन्न!

वेद यानी जानना और वेद यानी भुगतना (भोगना)। और ज्ञानी, भुगतने से लेकर जानने तक के सभी पद (हर एक अवस्था) में होते हैं।

प्रश्नकर्ता : उसमें तन्मयाकार हो जाएँ तो?

दादाश्री : हाँ, तन्मयाकार हो जाते हैं। मेरी भी दाढ़ में दर्द हो, तो मुझे तन्मयाकार नहीं होना हो, फिर भी भीतर ऐसा हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : उस समय शुद्धात्मा भूल जाते हैं।

दादाश्री : शुद्धात्मा भूल नहीं जाते। खुद को तन्मयाकार नहीं होना है, ऐसा ये ज्ञान ही ‘शुद्धात्मा हूँ’ यह साबित करता है।

दादावाणी

स्वरूप का लक्ष्य चूके नहीं, वह मोक्ष का तप

भगवान ने तप किसे कहा है? लोग जो तप करते हैं, उसे भगवान ने तप नहीं कहा है। वह तो लोक तप, लौकिक तप कहलाता है। मोक्ष के लिए तप अलौकिक होता है। भीतर सारे भावक, भाव करवाएँ उस घड़ी ऐसा तप करे कि ज़रा भी 'खुद का' चूके नहीं। भगवान महावीर ने भी यही तप किया था, ठेठ तक तप कर के ज्ञानसे देखते ही रहे और 'खुद' असरमुक्त रहे।

प्रश्नकर्ता : उसे असरमुक्त कैसे कह सकते हैं?

दादाश्री : भीतर सारे भावक हैं। खुद यदि भाव्य हो जाए, तो भाव होता है और फँसता है। तुम तो परमात्मा हो, इसलिए भाव को जानो। और यदि तुम भाव के ज्ञाता-दृष्टा रहे, तो नहीं फँसोगे। यदि भावक नहीं हों, तो खुद परमात्मा ही हो। ये भावक कौन हैं? पहले की (पिछले जन्म की) गुनहगारी वह भावक है, उससे बीज पड़ता है। भावक और भाव्य एकाकार हों तो योनि में बीज पड़ता है और उससे संसार खड़ा (उत्पन्न) होता है। यदि भावक और भाव्य एकाकार नहीं हों, वहाँ 'खुद' 'स्ट्रोंग' (दृढ़) रहा और 'खुद' भाव्य नहीं हो जाए, तो अनुबंध उदय में तो आता है, लेकिन बंध पड़े बगैर निर्जरा हो जाती है।

अंदर चले, वही पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : महावीर भगवान ने साढ़े बारह वर्ष और पंद्रह दिनों तक तप किया, वो कैसा निमित्त होगा? वो उनका पुरुषार्थ या पिछले कर्मों के उदयाधीन?

दादाश्री : वो तो उदयाधीन था। त्याग, वह उदय का परिणाम है और संयम वह समझ का परिणाम है। उसमें पुरुषार्थ तो भीतर है ही, किन्तु बाहर का भाग उदयाधीन है। जो बाहर जगत् के

लोग देखते हैं, वह उदयाधीन है और खुद देखते हैं, वह पुरुषार्थ है। और हमारा वही पुरुषार्थ चालू है। बाहर जो देखते हो वह उदयाधीन है। अंदर हमारा पुरुषार्थ है। बाह्य तप हमारा थोड़ा-सा भी नहीं होता, जब कि अंतर तप निरंतर चलता है।

अंतर तप तो भगवान महावीर करते थे और उनके ग्यारह गणधर करते थे। लोगों को जो दिखे ऐसे तप जो करते हैं न, उससे तो उन्हें पुण्य बंधता है। अंतर तप तो लोगों को नहीं दिखता। अदीठ तप के बारे में लिखा है न, दादा का अदीठ तप, फँरिन में न्यूर्योक के एरपॉर्ट पर दादा उतरते हैं, तब गर्म कोट पहनकर उतरते हैं लेकिन भीतर तप करते हैं, अदीठ तप!

आत्मभाव पुद्गलभाव में नहीं पैठे, फँरिन और होम के जोड़ (संधिस्थान) पर तन्मयाकार नहीं हों, तो अदीठ तप। वह प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण है। दूसरे सारे परोक्ष तप हैं।

शाता-अशाता वेदनीय तीर्थकरों को भी

भगवान ज्ञाता-दृष्टा रहते थे और उदयकर्म आए तब उस समय तप में रहते थे। कानों में कील (बेंत की लकड़ी) डाली गई, बड़े-बड़े खटमलों ने काटा। आत्मभाव पुद्गलभाव में परिणीत हो जाए ऐसे तप भगवान को आते थे।

भगवान महावीर को भी शाता-वेदनीय और अशाता वेदनीय होती हैं। कानों में कील डाली गई थी, लोहे की कील नहीं किन्तु लकड़ी डाली थी, अब ये उनको कितनी सारी अशाता वेदनीय देती होगी? भगवान भी वेदक तो थे!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, भगवान वेदक या भगवान का शरीर वेदक?

दादाश्री : भगवान भी वेदक। डॉक्टर जिसे शरीर कहते हैं न, जितना हिस्सा डॉक्टर देख सकते

दादावाणी

हैं न, फिजिकल बॉडी, भगवान उतने हिस्से के भी जिम्मेदार थे। उसकी वेदना होती है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वेदना होती है, उसका उनको पता चलता है, किन्तु उन्हें खुद वेदना होती है ऐसा तो हम नहीं कह सकते न?

दादाश्री : असर होता है, किन्तु उस घड़ी उन्हें जबरदस्त तप रहता है। उन्हें मानसिक वेदना नहीं होती। वाणी में वेदना नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : शरीर की वेदना और मानसिक वेदना में क्या फ़र्क है?

दादाश्री : मानसिक वेदना ज्ञान से उड़ जाए ऐसी वस्तु है और शरीर की वेदना ज्ञान से उड़े ऐसी नहीं है। दाढ़ दर्द करती हो, तो ठेठ (भीतर) तक असर होता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर मानसिक वेदना वो किस तरह की वेदना है?

दादाश्री : ये पूरा जगत् मानसिक दुःख में ही हैं न! इन लोगों को शारीरिक वेदना है ही नहीं, लोगों को मानसिक वेदना ही है। और शारीरिक वेदना तो, दाढ़ दर्द करती हो, तो भगवान को भी पता चलता है, किन्तु वह तप करते हैं। भीतर हृदय तपकर लाल-लाल (दर्द से बेहाल) हो जाए, वो भी खुद को दिखता है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु, शरीर तो कष्ट भुगतता है न?

दादाश्री : शरीर भुगतता है लेकिन भोक्ता ही वहीं पर है। वहाँ पर अहंकार भुगतता है। और उसे भी 'खुद' जानता है। शाता वेदनीय में वह रस नहीं लेता। इसलिए अशाता में भी उसे रस नहीं आता। वह तो अपने ज्ञान में ही रहता है। ये वेद अर्थात् वेदना, दुःख भुगतना और जानना। वेद यानी दु नो, दुःख भुगतने से लेकर जानने तक, वेद का अर्थ है।

जितने भी ग्रेडिएशन हों, वे सभी ग्रेडिएशन। (दुःख भुगतने से लेकर जानने तक की जितनी अवस्थाएँ हैं, वे सभी अवस्थाएँ...)

तप, केवलज्ञान होने तक

उस घड़ी उनका तप होता है, ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप। किन्तु केवलज्ञान होने तक तप होता है। केवलज्ञान होने के बाद तो कुछ भी नहीं होता। एब्सोल्यूट (पूर्ण) हो गया। एब्सोल्यूट को कुछ छूता ही नहीं। जब तक केवलज्ञान नहीं होता, तब तक एब्सोल्यूट होता ही नहीं। महावीर भगवान को जब तक केवलज्ञान नहीं हुआ तब तक वेदना आई थी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन केवलज्ञान होने के बाद भी उन्होंने बहुत वेदना और कष्टों को सहन किया ऐसा कहते हैं न?

दादाश्री : वे सारे कष्ट शरीर को हुए, शरीर को शाता-अशाता होती है, किन्तु उन्हें नहीं छूता। उन्हें तप करना भी नहीं पड़ता। ज्ञान-दर्शन-चारित्र सहज (अपने आप) ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : भोगावली कर्म जो हैं, वे तीर्थकर को भी नहीं छोड़ते, वे कैसे कर्म हैं?

दादाश्री : किसीको भी नहीं छोड़ते।

प्रश्नकर्ता : तीर्थकर गोत्र बाँधते हैं और साथ ही भोगावली कर्म भी बाँधते हैं?

दादाश्री : हाँ, उसमें तो चलता ही नहीं है न! या तो शाता या तो अशाता। तीर्थकर को भी शाता और अशाता दोनों होती हैं। उदय में दोनों होती हैं। भोगवटा (सुख-दुख का असर) में फ़र्क होता है। लोगों को ऐसा लगता है कि साहब को दुःख है। लोग मुझे देखकर ऐसा समझते हैं कि दादा को बुखार आया है, किन्तु उदय के बारे में भी मैं जानता हूँ भोगवटा भी मैं जानता हूँ।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : शाता-अशाता को कहाँ तक वेदते हैं?

दादाश्री : केवलज्ञान हो जाए तब-तक। केवलज्ञान होने के बाद शाता-अशाता वेदनीय का बिल्कुल असर नहीं होता। शरीर को तो शाता-अशाता वेदनीय बेशक्त होती है। ठंड हो तो देह को तो ठंड लगेगी न, किन्तु खुद वेदते नहीं। कई बाबतों में तो हम (दादाजी) भी नहीं वेदते।

ज्ञाता-ज्ञेय नहीं हो जाए, वह अदीठ तप

महावीर भगवान कौन-सा तप करते थे, वो आप समझ गए न? अदीठ तप! महावीर एक ही पुद्गल को किस तरह देखते थे? अंदर क्या चल रहा है, सारी क्रियाएँ, अंदर के स्पंदन मात्र के वह जानकार के रूप में थे। बाहर का कुछ भी नहीं देखते, सिर्फ अंदर ही देखते। भगवान खुद ही अपना तप देखते थे।

‘ज्ञाता-ज्ञेय’ के बीच जागृत रहे, वही तप। ‘ज्ञाता’, ‘ज्ञेय’ नहीं हो जाए वही अदीठ तप। हमें (दादाश्री) भी अदीठ तप करना पड़ता है, हमें हमारे अनुसार करना पड़ता है।

बिना वर्णन का अनुभव ज्ञान

प्रश्नकर्ता : दादाजी, शास्त्रों में भगवान ने जो बातें कही हैं लेकिन उन्होंने जो अनुभव किया, उसका वर्णन तो वाणी में पूरी तरह से हो सके ऐसा नहीं है।

दादाश्री : वर्णन नहीं हो पाता।

प्रश्नकर्ता : ये तो आपकी अनुभव वाणी ही है। इसलिए उसका सिर्फ कुछ अंश ही वर्णन में आया होगा न?

दादाश्री : हाँ, बस, बस।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ अंश ही आया न? कृपालुदेव

ने कहा है न कि उन्होंने ‘ज्ञान में जो अनुभव किया, वह भगवान कह (वर्णन) नहीं पाए’।

दादाश्री : ऐसा है, कि शक्कर मीठी है ऐसा लिखा गया है। मीठी मतलब क्या, ये नहीं लिखा है! शक्कर मीठी है ऐसा लिखा है। कैसी मीठी है, तो लिखा कि गुड़ जैसी है, इसके जैसी, उसके जैसी, सारा वर्णन किया है। किन्तु वास्तव में मीठी मतलब कैसी, वह वर्णन नहीं किया है। कहते हैं न, कि मार्गदर्शक मिले तब होता है। वर्ना तब तक मोक्ष नहीं है। जब शक्कर मुँह में रखो, तब समझना कि अब हम समझ गए कि ऐसी मीठी है, अनुभव हुआ। वर्ना तो बातें हैं सारी। त्याग करो या तप करो, अनंत जन्मों से यही करते रहे हैं। ऊधम, ऊधम, ऊधम! मार्गदर्शक मिला नहीं, वर्ना तो मुक्ति का मार्ग सहज ही हमारी समझ में आ जाता।

और फिर ये भी कहते हैं कि समकित हुआ हो तो केवली ही जानते हैं। अरे भाई, भीतर आत्मा है, मुझे पता नहीं चलेगा? भीतर आपको पता नहीं चलेगा? केवली से कहाँ पूछने जाएँ? चंदूलाल, क्या आपको पूछने जाना पड़ता है? नहीं। खुद सीधा हो गया है, क्या ये खुद को पता नहीं चलता?

प्रश्नकर्ता : चलता है, चलता है।

दादाश्री : आत्मा केवली ही है। तुरंत ही बता देगा कि राइट (सही राह पर) है। ये तो लोग ऐसा कहते हैं कि सम्यकत्व हुआ है या नहीं ये तो केवली ही जानते हैं। अरे भाई, अगर केवली ही जाने तो फिर हमने क्या जाना? सम्यकत्व का तो हमें पता चलना ही चाहिए।

वेदनीय भुगतकर करे तप

कर्म ऐसे होते हैं कि खुद को कड़वे रस भोगने (भुगतने) नहीं हों, फिर भी भोगने पड़ते हैं, ऐसी भयंकर वेदना देकर जाते हैं। जब ऐसा कर्म सहन नहीं हो पाए, उस घड़ी हमें उसे जानना है।

ज्ञाता के तौर पर नहीं रह पाए, उस घड़ी हमें इतना समझ लेना है, कि ज्ञाता हैं फिर भी ज्ञाता के रूप में रहने नहीं देते। बाहर धमाल मचाई है। किन्तु ऐसे कर्मों के लिए भी भगवान् ने कहा है कि वे काल के आधार पर उत्पन्न हुए हैं, इसलिए जब उनका काल समाप्त हो जाएगा, तब ऐसे कर्म आने बंद हो जाएँगे, तब तक तप करो। तब तक का ये जो तप है, उसे अदीठ तप कहा है। ऐसा तप, जो किसीको बाहर से नहीं दिखता। दाढ़ दर्द करती हो, तो ये दाढ़ की वेदना तो ज्ञानी को भी सहन नहीं होती और किसीको भी सहन नहीं होती। इसलिए वहाँ पर इन्जेक्शन लगाते हैं, तब सहन होती है। यानी उतने भाग को सुन्न कर देते हैं। जब कि ज्ञानी ऐसा नहीं करवाते, वे तो (उस तप को) भुगतते ही हैं। ये तप आया कहलाता है, प्राप्त तप कहलाता है।

ज्ञानी को सर्व संयोग एक समान

हमें तो बूढ़ापा नहीं, मृत्यु नहीं, जन्म नहीं। सिर्फ संयोग आते हैं और चले जाते हैं। ज्ञानीपुरुष को मृत्यु और जन्म दोनों एक समान होते हैं। संयोग मात्र ही होते हैं।

प्राप्त संयोग के अलावा जगत् में और कोई वस्तु है ही नहीं। प्राप्त संयोग का सुमेल रखकर समताभाव से निकाल करो। यह ग़ज़ब का वाक्य निकल गया है। इस एक ही वाक्य में तमाम शास्त्रों का ज्ञान सार के रूप में आपके लिए आ गया। प्राप्त संयोग के हम ज्ञाता-दृष्टा, अप्राप्त संयोग के नहीं। संयोग के अनुसार काम निकाल लेना है।

कृष्ण भगवान् कह गए हैं, कि प्राप्त को भोगो, अप्राप्त की चिंता मत करो। अभी तो भोजन की थाली सामने आई है, वह प्राप्त संयोग है। किन्तु उसे भोगते समय सेठ होते हैं कारखाने में और यहाँ सिर्फ उनका देह खाता है। अब इसमें कृष्ण भगवान् भी क्या करें?

प्राप्त तप का निकाल करे समझाव से

हमें तप ज़रूर करने हैं, किन्तु घर बैठे ही जो मिले हो वही करने हैं, उन्हें बुलाने नहीं जाना पड़ता! पुण्यशाली को सारी चीज़ें घर बैठे ही आ जाती हैं। गाड़ी में कभी कोई सामने से आकर लड़ने लगे, तो हमें समझ जाना चाहिए कि तप आया है! ‘ओहोहो! मुझे ढूँढते-ढूँढते घर तक आया!’ इसलिए उस समय तप करना है। भगवान् महावीर, प्राप्त तप के अलावा और कोई तप नहीं करते थे। जो प्राप्त तप आ मिला हो, उसे हटाना नहीं है! लोग तो क्या करते हैं, कि तप नहीं आया हो तो उसे बुलाते हैं, जैसे कि उदाहरण के तौर पर, कहेंगे ‘परसों से मुझे तीन उपवास करने हैं’ और आए हुए तप को ‘छीट-छीट’ करते हैं (हटाते हैं)। कहेंगे ‘इतने समय के लिए एक ही जगह पर, मैं पैर सिकुड़कर नहीं बैठ पाता, सामायिक कैसे करूँ? यह पैर ऐसा ही है।’ यानी फिर पैर को गाली भी देते हैं! ‘मेरा पैर ऐसा है, ये हम किसीको क्यों पता चलने दें? किसीसे इसका ज़िक्र किया, इसलिए उसे तप नहीं कहते। सामनेवाले को पता चला, मतलब वह आपके तप में से हिस्सा ले गया। तप हम करें और हमारे फ़ायदे में से वह थोड़ा हिस्सा ले जाए, तो ऐसा तप किस काम का? उसने हमारी बात सुनी, इसलिए उसे भी थोड़ा हिस्सा मिल गया। यों आश्वासन लेकर कमिशन कौन देगा? जितना आश्वासन लेते हैं, उतना तप कच्चा कहलाता है।

ज्ञानी को नहीं छूता दुःख कभी भी

यदि हमें दुःख होता हो तो हम ज्ञानी ही नहीं कहला सकते, हमें किसी भी प्रकार का दुःख ही नहीं होता। हमें दुःख छूता ही नहीं, कभी भी!

प्रश्नकर्ता : किन्तु स्वाभाविक दुःख ही नहीं छूता न?

दादाश्री : चाहे किसी भी प्रकार से किन्तु

दादावाणी

दुःख ही नहीं होता, स्वाभाविक या अस्वाभाविक, उसे ज्ञानी कहते हैं। हम इस शरीर में रहते ही नहीं हैं। शरीर में रहे, तो दुःख होगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यानी हमें दुःख ही नहीं होता। हम रोएँ तो भी वह दुःख नहीं होता। अंबालाल रोएँ तो भी दुःख नहीं होता, अर्थात् यह दशा (स्थिति) बहुत अलग प्रकार की दशा है!

प्रश्नकर्ता : उस हकीकत को मैं समझ सकता हूँ।

दादाश्री : सिर्फ हमें ही नहीं, इन सभी (महात्माओं) को दुःख नहीं होता। इन सभी लोगों से हमने कह दिया है कि एक भी दुःख हुआ, तो जिम्मेदारी मेरी है। दुःख क्यों लगना चाहिए मनुष्य को? क्या गुनाह किया है कि मनुष्य को दुःख हो? इसलिए, उनके (महात्माओं के) घर में भी कोई मर जाए तो उन्हें दुःख नहीं होता। कोई मर जाए, तो हमें भी आघात नहीं लगता।

व्यवस्थित के ज्ञान से लाएँ हल

मुझे यह ज्ञान नहीं हुआ था, तो भी व्यवस्थित का ज्ञान मैं लेकर आया था, कि यह जगत् व्यवस्थित है। मतलब, घर पर मेहमान आएँ हैं, वह व्यवस्थित ही है। तो फिर किसलिए उन्हें तरछोड़ (तिरस्कार सहित दुर्कारना) मारनी चाहिए! इतना ज़रूर है कि कभी भी मैं बाहर किसी से नहीं पूछता कि ‘आप कहाँ ठहरे हो और मेरे घर क्यों नहीं आए?’ किन्तु घर पर आएँ, वे अतिथि। किसीको भी ज़बरदस्ती नहीं लाना है। व्यवस्थित को व्यवस्थित ही रहने देना है और घर पर आए मतलब, वह व्यवस्थित है ही। और यह व्यवस्थित का ज्ञान आपको निश्चिंत बनाए ऐसा है।

अब वे मेहमान व्यवस्थित के अधीन आ गए।

और पाँच-सात दिनों के बाद भी जाएँ नहीं, तो मन में भाव बिगड़ते हैं कि ‘ये कहाँ से आ गए? ये लोग अब यहाँ से जाएँ तो अच्छा’, इसे भाव बिगड़ गए कहा जाता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। व्यवस्थित के अधीन आएँ हैं और व्यवस्थित के अधीन चले जाएँगे। अपने हाथ में हैं कुछ? वे अपने आप नहीं आएँ हैं, उन बिचारों की शक्ति नहीं है, उन पर क्यों द्वेष करते हो? यह व्यवस्थित का ज्ञान रौद्रध्यान-आर्तध्यान बंद करवा दे ऐसा है। ये व्यवस्थित का ज्ञान तो बहुत हेल्पिंग (मददकर्ता) है। इसी वजह से तो आराम रहता है और एकजोकट व्यवस्थित है।

व्यवस्थित के ज्ञान से बर्ते वीतराग

मैंने यह ज्ञान दिया है न कि मैं बोलता नहीं हूँ, व्यवस्थित बोलता है। मैं जो वाणी बोलता हूँ, उसका मैं लाभ नहीं उठाता कि भाई, मैं कितना अच्छा बोला! क्योंकि व्यवस्थित बोलता है, उसमें मुझे क्या लाभ हूँदा है? सामनेवाला व्यक्ति गालियाँ दे तो भी व्यवस्थित है और वह मान दे कि दादाजी, दुनिया में आप जैसा कोई हुआ नहीं है, तो भी मुझे क्या लेना-देना? मैं तो ‘मैं ही हूँ’, मुझे उनके शब्दों के साथ लेना-देना नहीं है, वर्तन के साथ लेना-देना नहीं है, मैं तो सिर्फ केवलज्ञान स्वरूप हूँ और कुछ हूँ ही नहीं! फिर मुझे क्या छुएगा जगत् का?

जो वीतराग होकर बैठे हैं उन्हें क्या छुएगा? और अंत में तो वीतराग ही होना है। किन्तु प्रयोग में हाथ डालें, तो हम जल जाएँगे। और फिर क्या इस पर से पता नहीं चलता कि ‘यह मेरी भूल है?’

प्रश्नकर्ता : समझ में आता है, तुरंत ही समझ में आता है।

दादाश्री : तुरंत समझ में आ जाता है कि ‘यह मेरी भूल है।’ ‘जब देखो तब वह भूल क्यों होती रहती है?’ तब कहे, ‘भूल नहीं हो, तो अनुभव ज्ञान नहीं होगा। भूल होती है, वह बड़ा

दादावाणी

तप है वर्ना तप उत्पन्न नहीं होता न! तप के पाये की ज़रूरत है ही'। हमें बहुत तप हुए आए थे, ऐसे जबरदस्त तप आए हुए थे। आपने तो क्या देखा है। आपने तो तप देखा ही नहीं है! क्योंकि हमारा तो कोई ऊपरी नहीं था न! इसलिए अपने आप ही तप करने पड़े थे! सारी रात जागना पड़ता ऐसे तप करने पड़े थे। किसीने ऐसा एक शब्द कह दिया हो, तो सारी रात जागना पड़ता ऐसे तप! और आपको तो दो-पाँच मिनटों के लिए तप होकर फिर बंद हो जाता है। क्योंकि आपके पास तो ज्ञान भी है। और हमें तो पहले बिना ज्ञान के ही चलना पड़ता था।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान होने से पहले?

दादाश्री : हाँ। आपको तो रौब है न! साथ में ज्ञान है न! देखो न, कैसे रौब से सो जाते हैं! आराम से ओढ़कर सो जाते हैं। दादा बिना ओढ़े सो जाएँ तो भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं, दादाजी, ऐसा नहीं है।

दादाश्री : मेरे कहने का मतलब यह है, कि मुझे ओढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मैं पहले से ही तपवाला व्यक्ति हूँ। आप अभी तप में पड़े ही नहीं हो, तप देखा ही नहीं है। आपने तप देखा है? जो आ मिले हैं वे तप करते हो, किन्तु जो नहीं आए हैं, उनका क्या? जो प्राप्त नहीं हुए हैं ऐसे तप का क्या? ओढ़ते हो न आराम से! और मेरे लिए तो, एक और चीज़ ओढ़ने के लिए रखते हो, फिर भी मैंने कहा, 'एक तरफ रख दो, दूसरा भी है और यह भी है, दोनों को एक तरफ रख दो, रात में ज्यादा तकलीफ़ होगी, तो थोड़ा ओढ़ लेंगे।'

प्रश्नकर्ता : बहुत ज्यादा ठंड लगे, तो ही।

दादाश्री : ठंड तो जबरदस्त होती है, लेकिन सुबह होते-होते शरीर में खून जम नहीं जाए, इतना हमें देखना पड़ता है।

आत्मा की जागृति उड़ाए नींद

प्रश्नकर्ता : आपकी जो नींद की अवस्था होती है, उसमें भी यह सब अलगपन रहता है?

दादाश्री : अलग, एकदम अलग रहता है। किसी भी अवस्था में अलग, तन्मयाकार नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : उस समय तो बहिरमन नहीं होता। नींद में तो बाह्यमन नहीं होता न?

दादाश्री : आपका भी नींद में अलग ही होता है, लेकिन आपको एक हो गया है ऐसा लगता रहता है, भासित हुआ करता है। मुझे ऐसा भास नहीं होता, इतना ही है। क्योंकि, एक बार दही को बिलोकर मक्खन अलग कर दिया, फिर उसके बाद उस मक्खन को छाछ में डालकर हिलाओ तो फिर से दोनों एकाकार नहीं हो जाते। टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, किन्तु छाछ और मक्खन एक नहीं हो जाते। अर्थात् आपको भी यों अलग ही रहता है, किन्तु आपको ऐसा भास होता है कि फिर से एकाकार हो गया है।

हम तो निद्रा पसंद ही नहीं करते। ठंड के दिनों में हमें जैसे ही लगे कि नींद आनेवाली है, तब हम ओढ़ा हुआ कंबल भी हटा देते हैं। इसलिए फिर ठंड लगे तो नींद नहीं आती। हमने कभी भी इस शरीर को सोने नहीं दिया है। लेकिन आप ऐसा मत करना। हाँ, हम जो करें वह आपको नहीं करना है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, आप तो सोना नहीं चाहते, हम तो सोना चाहते हैं।

दादाश्री : नहीं, नहीं। ये ऐसा आपका काम नहीं है।

आत्म जागृति का उपयोग किसमें?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, कम नींद लेने से शरीर बिंगड़ता नहीं है? मान लीजिए कि हम जबरदस्ती

दादावाणी

ऐसा करें कि जागना है, तीन घंटे सो लिए यानी हो गया। तो फिर शरीर बिमार पड़ गया तो?

दादाश्री : ऐसा है, रात को हमारी तो भीतर ढाई घंटों तक विधियाँ चलती हैं। साढ़े ग्यारह बजे तक तो सत्संग चलता है, बारह बजे सो जाते हैं। और सुबह साढ़े छः बजे मैं उठ जाता हूँ। फिर सबके लिए विधियाँ करता हूँ। मेरा काम शुरू होता है तो रात को साढ़े ग्यारह बजे तक काम चलता है। सिर्फ बीच में मुझे ढाई घंटे के लिए अवकाश मिलता है। आधा घंटा खाने के लिए और दो घंटे आराम के लिए, उसके अलावा निरंतर यही काम रहता ही है। कितने घंटों के लिए मेरा काम हुआ?

प्रश्नकर्ता : चौबीस घंटों में से ढाई घंटे कम।

दादाश्री : सुबह साढ़े छः बजे से रात के साढ़े ग्यारह बजे तक, उसमें से ढाई घंटे कम कर दें तो कितने घंटे हुए?

प्रश्नकर्ता : सुबह साढ़े छः बजे से रात के साढ़े ग्यारह। बारह और पाँच सत्रह, सत्रह घंटे।

दादाश्री : सत्रह में से ढाई कम किए?

प्रश्नकर्ता : ढाई घंटे कम नहीं किए।

दादाश्री : मतलब हमेशा के लिए मुझे इतनी देर काम करना पड़ता है। ३६५ (तीन सौ पैंसठ) दिनों में से एक भी छुट्टी नहीं होती। दिवाली के दिन दस हजार लोग दर्शन करने के लिए आते हैं। मतलब मुझे छुट्टी नहीं होती।

नहीं लिए नींद के सुख कभी भी

नींद में कभी भी सुख आया ही नहीं और मुँह मीठा हुआ भी नहीं। व्यर्थ ही कोशिश करनी। इससे अच्छा, ‘तुम्हें जब आना हो तब आना और नहीं आना हो तो तुम्हारे घर पर रहना’ कहें। इतनी शूरवीरता तो होनी चाहिए न? आत्मा होने के बाद शूरवीरता नहीं हो तो फिर किसमें शूरवीरता होगी?

अर्थात् हम कभी भी सोए नहीं हैं। हम रोज़ कहते हैं कि हम कभी भी नहीं सोते। भीतर विधियाँ चालू रहती हैं और शरीर सोने की तैयारी करे तब हम ओढ़ा हुआ हटा देते हैं इसलिए फिर अपने आप ठंड लगती है...इस तरह गोदा मार आते हैं (प्रतिकुल संजोग उत्पन्न करते हैं)।

थोड़ी-सी ठंड लगते रहनी चाहिए। हाँ, चद्दर ओढ़ी कि बेभान! बेभान जैसा हो जाता है। और फिर गहरी नींद! मानों अमेरिका चले गए हों! सुबह मानो जैसे अमेरिका पहुँच गए हों ऐसा लगता है। अरे मुआ, यों ही भटक मरोगे! मनुष्य जन्म मिलने के बाद चद्दर तानकर सोया नहीं जाता। थकान कम करने के लिए थोड़ा सोना है, पूरे दिन काम करके थक जाते हैं, इसलिए।

नींद के सुख से आवृत्त होता है आत्मसुख

कई सालों से ऐसा है, रात को हमारी तबियत बिगड़ गई हो, नींद नहीं आई हो, सारी रात जागे हों फिर भी हम सुबह साढ़े छः बजे उठ जाते हैं। एकजेट साढ़े छः बजे। हम जब उठते हैं तब साढ़े छः बजे ही होते हैं। किन्तु हम तो सोते ही नहीं हैं। क्योंकि सोने का ये भौतिक सुख हम नहीं लेते। आपको अच्छी नींद आती है न, यह भाईसाहब को अच्छी नींद आती है। मन में कहते हैं, ‘आज अच्छी नींद आई।’ किन्तु सुख कहाँ से आया वो नहीं जानते। पुद्गल में से आया है। ये आत्मा का सुख नहीं है। पुद्गल का सुख चखो, तब आत्मा का सुख आना बंद हो जाता है।

नींद में से आनंद लेते हैं न, वह आत्मा का आनंद नहीं है। नींद में जो टेस्ट (स्वाद) आता है, वह आत्मा नहीं है। ये आनंद लेना बंद हो जाए, तो आत्मा का आनंद चखने मिलता है, वर्ना कैसे मिलेगा?

नींद कितनी लेनी चाहिए? भगवान ने तीन घंटे सोने के लिए छूट दी है। यह जगत् सोने के लिए

दादावाणी

नहीं है। ज्ञान मिलने के बाद ज्यादा नींद नहीं आए वो तो अच्छा है, ज्ञाता-दृष्टि पद विशेष रहता है। हम पिछले बीस सालों से डेढ़ घंटे से ज्यादा सोए नहीं हैं। ज्ञान जागृति में ही रातें बिताई हैं। नींद कितनी लेनी चाहिए? इस देह को कार्य करने के बाद थकान उतारने जितनी ही और उसके लिए तीन घंटे पर्याप्त होते हैं।

ज्ञानीपुरुष तो निरंतर जागृत ही रहते हैं। खुराक (खाना) कम हो गया हो, नींद कम हो गई हो तब जागृति बढ़ती है, वर्ना प्रमादचर्या रहती है। ज्यादा नींद आए, उसे प्रमाद कहते हैं। 'प्रमाद यानी आत्मा को गठरी में बाँधने के समान है।'

इस स्टेशन पर नींद कैसे पुसाए?

बीस-बीस सालों से हम सोए ही नहीं हैं, यह जगत् कैसे बना है ये जानने के लिए। फिर नींद भी कैसे पुसाए? अनंत जन्मों से सोए ही थे न! लेकिन सुरत के स्टेशन पर मुझे आनंद आ गया। (जब आत्मज्ञान हुआ तब)

जब से मुझे वीतराग विज्ञान प्रकट हुआ, तब से एक क्षणभर के लिए भी मैंने समाधि के अलावा कुछ और देखा नहीं है। छब्बीस सालों से एक मिनट के लिए भी सोया नहीं हूँ। आपका तो कल्याण ही हो जाएगा न! आप जो माँगो वह मिले ऐसा है न? मेरा काम है बताना सो बता देता हूँ।

इतना अच्छा लाभ मिला है! पूरा जीवन इसके लिए, आत्मा के लिए व्यय किया है, तो फिर अब किसलिए बैठे रहे हो? क्या यों सारी रात सोया जाता है? सारी रात प्रतिक्रमण करने हैं, फुरसत मिले तो कोई छोड़ता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं छोड़ता।

दादाश्री : नींद का स्वभाव तो ऐसा है, कि अगर आप सो नहीं जाओ तो फिर दूसरे आधे घंटे के लिए तो ऐसी नींद आ जाती है कि सारी कसर

पूरी हो जाती है। हम लोग ट्रेन में बैठते हैं न, तो ट्रेन में भी बैठे-बैठे नींद आ जाती है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : फिर कसर पूरी हो जाती है। बहुत गहरी, कैसी नींद आ जाती है? मैंने कहा न कि, हम तो एक घंटे से ज्यादा नहीं सोए थे, रोज़ एक घंटा, पिछली गाँठों को तोड़ने के लिए।

ज्ञानी की सर्वोच्च सहनशीलता

कोई किसी साधु महाराज को टाट नहीं मिले और गद्दा मिले तो उसे नींद नहीं आती, क्योंकि बुरी आदत पड़ गई है और पलंग पर सोनेवाले को नीचे (ज्ञानी पर) नींद नहीं आती, क्योंकि उसे पलंग की बुरी आदत पड़ गई है। भगवान ने क्या कहा है, कि तुम्हें चार रजाई (गद्दे) दें या चटाई दें, तो भी नींद आ जानी चाहिए। समानता रहनी चाहिए। वर्ना तुम्हें एक प्रकार की बुरी आदत पड़ गई है। प्रैविट्स हो गई है। हमें (दादाश्री) तो पहले से ही चार गद्दे हो तो भी नींद आती है और चटाई हो तो उस पर भी नींद आती है। हम कारोबार करते थे, तब ऐसे ही सो जाने की आदत रखी थी। और जंगल में काम पर जाते, तो कंकर नहीं हों तो कंकर इकट्ठा करके बिछाते, कि जिससे नींद नहीं आती और आत्मा हाजिर रहता। हमारी सहनशीलता वर्ल्ड में टॉप पर होती है।

ज्ञान से पहले विकसित किया तितिक्षा गुण

घाँस या पुआल (जंगली लकड़ी) पर सोने की बारी आए और कंकर चुभते हों, उस घड़ी याद आता है कि 'अरे, घर में कितना अच्छा था', तो इसे तितिक्षा नहीं कहा जाता। कंकर चुभते हों तो वो अच्छा है ऐसा लगना चाहिए। ये तो मैंने सिर्फ आपको सोने की बाबत में कहा, बाकी जब ऐसे संयोग आए तब क्या करना चाहिए? अर्थात् हर एक बाबत में ऐसा ही होता है। सहन नहीं हो पाए ऐसी

दादावाणी

ज़ोरों की ठंड में बिना ओढ़े सोना पढ़े, तो तब क्या करोगे? आपने ऐसी प्रैक्टिस नहीं की है। मैंने तो पहले ऐसी बहुत प्रैक्टिस की थी। लेकिन अब तो सारे इतने आरामदायक संयोग मिलते हैं कि मेरा तितिक्षा गुण ही घट गया, वर्ना मैंने तो सारे तितिक्षा गुण विकसित किए थे।

वेदांतियों ने तितिक्षा गुण विकसित करने को कहा है। जैनों ने बाईंस परिषह सहन करने को कहा। भूख उत्पन्न हो, प्यास उत्पन्न हो, भीतर भूख-प्यास ज़ोरों की उत्पन्न हो, ये सब समताभाव से सहन करना सीखो।

विकसित होता है मनोबल, तितिक्षा से

इस शरीर को कठिनाई की प्रैक्टिस हो जाती है! खाने के लिए जो भी मिले उसमें आश्वर्य नहीं होना चाहिए कि, 'यह ऐसा है? यह कैसे भाएगा?' इस प्रकार, ठंड-धूप हर एक बाबत में होना चाहिए।

लोगों ने प्यास तो देखी ही नहीं है। जंगल में गए हों और पानी नहीं मिले, उसे प्यास कहते हैं। ऐसी भूख-प्यास हमने देखी है। कॉन्ट्रैक्ट के काम के लिए जब जंगलों में गए थे तब ऐसी भूख-प्यास देखी थी। बर्फ़ गिरे ऐसी ज़ोरों की ठंड हो और सहन नहीं हो पाए, कभी कड़ी धूप हो, इस शहर में होती है ऐसी नहीं। बॉम्ब गिरते हों, तब मनोबल का पता चलता है! मनोबलवाले को देखो तो मनोबल उत्पन्न होता है। किन्तु जगत् ने मनोबल देखा ही नहीं है। हम में तो गज्जब का मनोबल होता है। लेकिन उसे आप देखा करो न, जो जितना देखे उतनी शक्ति उसमें उत्पन्न होती है। मैं उस रूप हो गया हूँ। और आप धीरे-धीरे उस रूप हो रहे हो और एक दिन उस रूप हो जाओगे। लेकिन आपको तो छोटा रास्ता मिल गया है और मुझे तो बहुत लंबा रास्ता मिला था। मैं त्याग और तितिक्षा कर-करके आया हूँ। तितिक्षा तो बहुत की थी। एक दिन दरी पर सो जाता,

एक दिन दो रजाईयों पर सो जाते, यदि दरी पर सोने की आदत लग जाए तो रजाईयों पर नींद नहीं आती और रजाईयों पर सोने की आदत लग जाए तो दरी पर नींद नहीं आती।

किए ऐसे 'तप' भी

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपके पाँव में ये कैसे घटे पड़े गए हैं?

दादाश्री : ये तो हमने आत्मा प्राप्त करने के लिए तप किया था। वो भी कैसा तप कि जूते में से कील ऊपर की ओर निकल आई हो तो उसे ठोककर ठीक नहीं करते थे, यों ही चलाते रहते। फिर हमें पता चला कि ये तो हम उल्टी राह पर हैं। हमने यह का तप किया था। जूते की कील बाहर निकल आए और चुभे उस वक्त यदि आत्मा हिल जाए (आत्मा को असर होने लगे) तो आत्मा प्राप्त ही नहीं हुआ, ऐसा मैं मानता था। इसलिए यों तप होने देता था। किन्तु उस तप का दाग अभी भी गया नहीं है! तप का दाग सारी ज़िन्दगी नहीं जाता। तप तो अंदर का होना चाहिए।

ज्ञानी रहे सदा वीतराग

ज्ञानीपुरुष को तपना नहीं पड़ता। इसलिए चेहरा परमानंदी दिखता है। और तपना, वह भी पूरण-गलन (चार्ज होना-डिस्चार्ज होना) स्वभाववाला है। तप करते समय भीतर लाल-लाल हो जाता है और थोड़ी देर में शांत भी पड़ जाता है।

रोना आए तब आप रोते हैं या नहीं रोते? और हँसना आए तब हँसते हैं न? मैं तो बीस सालों से किसी चीज़ पर, पुद्गल पर हँसा नहीं हूँ। क्या हँसना? यह तो सारा जूठन है। और सभी जूठन ही खाया करते हैं हर जगह। लोग श्मशान की राख के ही लड्डू खाते हैं। वही की वही जूठन, नई जूठन नहीं आती। पुद्गल अर्थात् जूठन। पूरण-गलन, पूरण-गलन, पूरण-गलन, पूरण-गलन..... शुद्धात्मा और पूरण-गलन दो ही वस्तुएँ हैं, उसमें तो कितने ही

दादावाणी

शास्त्र लिखे गए! ओहोहो! दो ही वस्तुएँ हैं, पूरण होता रहता है और फिर उसका गलन हुए बिना रहता ही नहीं न! खाया इसलिए संडास (मल त्याग करने) जाना पड़ता है। और कई बार तो उल्लियाँ भी होती हैं न? पूरण और गलन अपने आप होने दो, वर्णा दुःखी हो जाओगे। खाओगे और संडास नहीं जाओगे, तो दुःखी हो जाओगे। पानी पीओगे और पेशाब (मूत्र-त्याग) करने नहीं जाओगे, तो दुःखी हो जाओगे।

दो विभाग, चेतन और जड़। पुद्गल वह जड़ विभाग है। नहीं खाना हो तो भी खाना पड़ता है। भोगना नहीं हो, तो भी भुगतना पड़ता है। रुचि और अरुचि ये राग-द्वेष के भाई हैं, उसीसे संसार है। वीतराग अर्थात् मोक्ष।

पूरण-गलन में सुख कहाँ?

अरे, कई लोगों को तो, मुझे जैसे व्यक्ति को तो खाना भी अच्छा नहीं लगता! मुझे खाना अच्छा लगता होगा? यों झङ्झट करनी, दांत से चबाना, ये सारी पीड़ा अच्छी लगती होगी? किन्तु चारा ही नहीं हो वहाँ क्या कर सकते हैं! लेकिन हम उससे अलग रहते हैं इसलिए हमें कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन अगर देखने जाए तो कई लोगों को अच्छा नहीं लगता। जो विचारक हो गया है न, विचारक को सब समझ में आता है कि ये सब किसलिए? रोज़ दातुन किसलिए करने हैं? अंत तो आना चाहिए न? आज अच्छी तरह से दातुन कर लिया फिर अंत आ जाना चाहिए न? आज नहीं तो आठ दिनों के बाद भी अंत तो आना चाहिए न? किसी का भी अंत आया? इसका कारण यह है कि क्या पूरण-गलन का अंत आता होगा? भगवान ने क्या कहा है? पूरण-गलन खत्म ही नहीं होता। गलन होने के बाद पूरण होता रहता है और पूरण होने के बाद गलन होता रहता है, धंधा ही यह कर रखा है। यदि तुम विचारशील हो तो मैं तुम्हें इस पूरण-गलन के बारे में साफ कह देता हूँ कि पूरण-गलन वस्तुओं के भाग करते (घटाते)

जाएँ, तो आत्मा हाथ लग जाए ऐसा है, लेकिन उसकी समझ में नहीं आता न!

इसलिए कृपालुदेव ने कहा है न कि ज्ञानीपुरुष वे तो दुर्लभ, दुर्लभ, दुर्लभ हैं! उन्होंने खुद लिखा है कि, 'मुझे ज्ञानी मिले होते, तो उनके पीछे-पीछे चला जाता। हमें यह झङ्झट नहीं करनी पड़ती, लोग हमें ज्ञानी मान बैठे हैं और हमें जो त्याग करना है वह हो नहीं रहा।' क्योंकि क्रमिक मार्ग में त्याग करना ही पड़ता है, चारा ही नहीं है। क्योंकि पूरण के साथ गलन होता है। और यहाँ अक्रम में तो पूरण ही बंद कर देते हैं न! पूरण ही स्टोप इसलिए फिर सिर्फ गलन ही रहा। यह विज्ञान पूरी तरह से समझ लें तो किसी भी स्थिति में उसे समाधि ही रहती है। लेकिन हमारे पास आकर समझ लेना चाहिए। पूछ-पूछकर सबकुछ समझ लेना चाहिए। आपने समझ लिया है या अभी कच्चा रखा है?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, समझ में आ रहा है। धीरे-धीरे फीट होता जा रहा है।

सच्चा तप किसे कहते हैं?

भगवान ने 'ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, यह चारों मोक्ष के याये (स्तंभ) हैं' ऐसा कहा, किन्तु लोगों ने इसे अपनी भाषा में समझ लिया। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह ज्ञान, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसी प्रतीति वह दर्शन और ज्ञाता-दृष्टा रहे वह चारित्र। और, बाहर (बाहरी भाग में) कुछ हो जाए तब हृदय तपे उस समय उसे देखना और जानना वह तप, उसे अंतर तप, अदीठ तप कहा। मोक्ष में जाने के लिए अंतर तप की ज़रूरत पड़ेगी, मोक्ष में जाने के लिए बाह्य तप की ज़रूरत नहीं है। बाह्य तप से अच्छी गति मिलती है, किन्तु मोक्ष नहीं मिलता। अदीठ तप देख नहीं पाते ऐसा होता है। फँसिन (अनात्मा विभाग) में प्रवेश नहीं करना और होम (आत्म विभाग) में ही रहना, उसे ही भगवान ने सच्चा तप कहा। आत्मा और अनात्मा के जोड़ (संधिस्थान) को एक नहीं होने दें, वह वास्तविक

दादावाणी

तप। और यह तप भी किसलिए करना है? क्योंकि अनादि से फँसिन का ही अध्यास है इसलिए तप करना पड़ता है, फिर भी इस तप में तपना नहीं होता।

होम और फँसिन के जोड़ पर ज्ञानी का तप

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञानीपुरुष को भी साधना और तप होते हैं?

दादाश्री : ज्ञानीपुरुष को साधना नहीं होती। साध्य वस्तु प्राप्त होने के बाद साधना नहीं होती। और तप, यह जो बाहर का तप होता है, ऐसा तप कभी भी नहीं होता। वह जो दिखता नहीं, ऐसा तप होता है, उन्हें अदीठ तप होता है।

दादा अदीठ तप करते हैं। देखीए न, वैसे तो कोट कितना महँगा पहनते हैं, जूते पहनते हैं, उन पर पॉलिश भी लगाते हैं, फिर तप कौन-सा करते हैं?

प्रश्नकर्ता : अदीठ तप।

दादाश्री : हाँ, अदीठ तप। एक क्षण भी बिना तप किए नहीं जाता। हॉम डिपार्टमेन्ट-फँसिन डिपार्टमेन्ट पर एकजोक्ट तप चलता रहता है। हॉम में से फँसिन में कुछ चला नहीं जाता और फँसिन में से हॉम में कुछ नहीं जाता, इतना तप करते हैं।

आंतरिक तप से मोक्ष है। हमारा तप बाहर नहीं दिखता लेकिन अंतर में निरंतर तप रहता है। निरंतर चौबीसों घंटे तप रहता है हमें। हमें कैसा तप रहता है? हम हॉम डिपार्टमेन्ट में से फँसिन डिपार्टमेन्ट में एक क्षण के लिए भी नहीं आते। हमारा तप वहाँ होता है। होम डिपार्टमेन्ट और फँसिन डिपार्टमेन्ट के जोड़ पर हमारा तप होता है। और हम फँसिन डिपार्टमेन्ट में ज़रा भी प्रवेश नहीं करते।

बर्ते निरंतर स्वपरिणती ही

ज्ञानी का तप कैसा होता है? एक क्षण के लिए भी संसार को टिकने ही नहीं देते। हॉम डिपार्टमेन्ट

(शुद्धात्मा) और फँसिन डिपार्टमेन्ट को अलग ही रखते हैं। हमारी परपरिणती एक सेकन्ड के लिए भी नहीं होती और हमेशा निरंतर स्वपरिणती ही रहती है।

हमारा तप हमें घड़ीभर के लिए भी संसार में नहीं रहने देता, ऐसा हमारा तप होता है। तप अर्थात् हॉम डिपार्टमेन्ट में से फँसिन में कभी भी नहीं जाते। फँसिन में जाने के लिए ज़रा आगे बढ़े उससे पहले तो अंदर शोर मच जाता है। मतलब हॉम और फँसिन के बीच का जो जोड़ है, वहाँ पर हमारा तप खड़ा है। परपरिणती और स्वपरिणती, ये शब्द आपने सुने हैं न? एक सेकन्ड के लिए भी हमारी परपरिणती नहीं होती।

भगवान ने ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, मोक्ष के चार पाये कहे। इन सबको मनुष्य पाँच इन्द्रियों से देख पाए ऐसा नहीं है। जो तप किसीको भी नहीं दिखता और फिर भी तप है, वही मोक्ष में ले जाता है। जो दिखता है ऐसा तप चर्तुर्गति में ले जाता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, कुछ समझ में नहीं आया, ज़रा फिर से कहीए। और थोड़ा विस्तार से कहीए। इसका रहस्य खोलिए।

दादाश्री : ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप यह चार पाये जिनके पास होते हैं, उनका बाहर कुछ भी नहीं दिखता, ज्ञान नहीं दिखता, दर्शन नहीं दिखता, चारित्र नहीं दिखता और तप भी नहीं दिखता। बाहर यों पाँच इन्द्रियों से नहीं दिखता, वह तो उनके परिचय से समझ में आता है। क्योंकि, सबकुछ आंतरिक होता है। और जो बहर दिखता है वह संसार का कारण है। बाह्य ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, वह संसार का कारण है। मतलब ऊर्ध्वर्गति का कारण है। पुण्य बंधे जाने का कारण है। और वह आंतरिक, मोक्ष का कारण है।

उपयोग निरंतर अदीठ तप का

पूरा दिन ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप। दादा ही

दादावाणी

दिखाई देते हैं, यदि देखना आए तो। ये चारों दिखाई देते हैं, ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप। हमें निरंतर तप होता है। हम निरंतर चौबीसों घंटे तप में ही होते हैं। लेकिन हमारा तप अदीठ तप होता है। जो तप दिखाई देता है, उससे पुण्य बंधता है। जो तप दूसरे देख सकते हैं, उससे पुण्य बंधता है। जो तप दिखाई नहीं दे उससे मोक्ष होता है, इसलिए हमारा अदीठ तप होता है।

प्रश्नकर्ता : अदीठ तप कैसा होता है?

दादाश्री : दिखाई नहीं दे ऐसा। किसीको भी नहीं दिखता, ऐसा। कि जो आत्मा और अनात्मा के जोड़ पर हमारा तप होता है, जो एकाकार नहीं होने देता। तन्मयाकार नहीं होने दें, उस जोड़ पर होता है, इसलिए अंदर का तप लोगों को बाहर कैसे दिखाई देगा? बाहर तो, उदय के मुताबिक सबकुछ होता है, किन्तु अंदर के तप को अदीठ तप कहा जाता है। वह हॉम डिपार्टमेन्ट में से फँरिन में नहीं जाने देता। फँरिन में सुपरफ्लुअस (सतही तौर पर) रखता है, सुपरफ्लुअस। फँरिन में तो, उसका जो उदय कर्म है उस उदयकर्म के अधीन रहने देता है, उसमें दखल नहीं करता। मेरा किसी भी प्रकार का तप आपको दिखता है?

हम निरंतर तप में रहते हैं। एक क्षण के लिए भी तप के बाहर नहीं होते। तप मतलब, आपको तो क्या तप करने पड़ते हैं! मेरा तप अलग प्रकार का होता है। मेरा तप मतलब फँरिन में जाता ही नहीं, उपयोग फँरिन में जाता ही नहीं है, उपयोग हॉम में ही रहता है। आपकी समझ में आया न? मेरा तप यह स्तर का होता है।

दादा के अलौकिक निभ्रांत तप

दादा का तप, वर्ल्ड में वीतरागों के अलावा किसी ने किया नहीं है, ऐसा यह दादा का तप है। लेकिन ये सब आपको दिखेगा कैसे? एक क्षण के

लिए भी हम पुद्गल के साथ हाथ नहीं मिलाते। जो पौद्गलिक भाव कहा जाता है, उसके साथ एक क्षणभर के लिए भी हम हाथ नहीं मिलाते। इसलिए वहाँ पर, कि यह पौद्गलिक भाव और यह चेतन भाव है, वहाँ हमारा तप होता है। आपकी समझ में आया? अर्थात् चेतन भाव एक भी पौद्गलिक भाव में परिणित नहीं हो वहाँ तप करना है। क्योंकि, उदाहरण के तौर पर कभी जब दादा का कान काटते हों और उस घड़ी तब यदि तप नहीं हो पाया तो चेतनभाव पौद्गलिक भाव को प्राप्त कर लेता है। क्योंकि अभी भी देह तो जोइन्ट (जुड़ा हुआ) है न?

प्रश्नकर्ता : देह नज़दीक है न!

दादाश्री : हाँ, नज़दीक है और संयोग संबंध भी हैं न! किन्तु कान काटते हों तब कान के साथ एकाकार नहीं होता, लेकिन पुद्गल भाव के साथ एकाकार हो जाता है। अब वहाँ उस घड़ी तप टूटा कहलाता है। भगवान कहते हैं कि तप नहीं टूटना चाहिए। तब वहाँ तप रखना है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, उन सभी को बाउन्ड्री पर रखना है। अब यह तो बाहर खुला दिखेगा ही नहीं न किसीको? यह वीतरागों का मत है।

अर्थात् भगवान ने ये जो चार कहे हैं, (उनमें से) ज्ञान भी बाहर नहीं दिखता, दर्शन भी बाहर नहीं दिखता। वे सब आंतरिक हैं। भगवान का सब रियल भाषा का है और वह दूसरा रिलेटिव भाषा का है, भ्रांत भाषा है, लौकिक भाषा है। और भगवान का अलौकिक वस्तु है, निभ्रांत (बिना भ्रांति का) भाषा है।

ज्ञानी ही बतें हरदम, स्व-पर के जोड़ पर

स्थूल में तपना, ऐसा तो हमें कभी होता ही नहीं। तब भीतर तपने जैसा कुछ होता ही नहीं न! कुछ भी तपता ही नहीं है! निरंतर सूक्ष्म में तप होता है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : चारित्र में आ गया है इसलिए ऐसा है?

दादाश्री : चारित्र में आ गया है इसलिए। चारित्र की बात को जानते हुए भी किसी कारणवश, जैसा होना चाहिए वैसा चारित्र रहता नहीं है। चारित्रवाले ये सब बोलते नहीं।

प्रश्नकर्ता : क्या नहीं बोलते?

दादाश्री : भगवान भी बोलते थे, और मैं बोलता हूँ। किन्तु भगवान भीतर दखल नहीं करते थे, मैं दखल (औरों के कल्याण के लिए) करता हूँ। मतलब उतना चारित्र दखलवाला कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : तो उस समय तप होता है?

दादाश्री : नहीं, (हमें) तप की जरूरत नहीं होती! तप तो कोई हुआ ही नहीं है। तप हो तब तो चेहरा बिगड़ जाता है। अरे! तप का तो टेन्शन (तनाव) रहता है।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न कि 'स्व और पर दोनों जोइन्ट (एक साथ) नहीं हो ऐसा हमें तप रहता ही है।'

दादाश्री : वह तो हमें ज्ञान ही बरतता है। तप समाप्त हो गया होता है। वे दोनों कभी भी जोइन्ट नहीं होते। प्रतीति और अनुभव बदलते नहीं ऐसा हमारा चारित्र होता है। फिर तो अंदर तप बिल्कुल भी नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : जब तक तप करते हैं तब तक अपूर्णता कहलाती है न?

दादाश्री : अपूर्णता तो, ठेठ 'केवलज्ञान' होने तक अपूर्ण ही कहलाता है। मेरा भी अपूर्ण है और आपका भी अपूर्ण है।

तप करने से खुद की ज्ञानदशा की डिग्रीयाँ बढ़ती हैं। तप अंतिम शुद्धता लाता है। सौ प्रतिशत शुद्ध सोना तो मैं भी नहीं कहलाता और आप भी नहीं कहलाते। और ज्ञानी को भी देह के तप होते हैं। ज्यादातर मेरे तप कम हो गए हैं। मुझे तप होते ही नहीं।

सूक्ष्मतर तप से पहुँच पाए पूर्णता तक

इसलिए लिखा है न, कि दादा अदीठ तप करते हैं। अदीठ तप वह अंतिम तप कहा है। हम अंतिम तप करते रहते हैं। आत्मा और अनात्मा - दोनों के जोड़ के बीच का तप, अनात्मा की ओर जाते ही नहीं। फ़ॉर्सिन डिपार्टमेन्ट में जाते ही नहीं, हॉम डिपार्टमेन्ट में ही रहते हैं, वहाँ तप रखना है। वह अदीठ तप। आपका भी इस तप में तपते- तपते फिर आगे अदीठ तप तक आएगा।

हमें निरंतर तप रहता है। आपका तप स्थूल तप है, हमारा तो बहुत सूक्ष्म तप है। लेकिन यह स्थूल जल जाएगा (समाप्त हो जाएगा), उसके बाद स्थूल में से सूक्ष्म में तप आएगा, सूक्ष्म में से सूक्ष्मतर तप आएगा। उसके बाद मेरा जो तप है, उसके करीब आपका तप आएगा। यह सारी कमी पूरी होगी तब तक ये सारे कर्ज चुकता हो जाएँगे तब ठिकाना लगेगा।

यों स्थूल में से सूक्ष्म होगा तभी वह भगवान बनेगा, सीधा, डाइरेक्ट! बिना किसी कक्षा में उत्तीर्ण हुए!

जय सच्चिदानन्द

'दादावाणी' पत्रिका के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

दादाई जग कल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

२६ मई : सीमंधर सिटी, अडालज त्रिमंदिर संकुल में रहनेवाले महात्माओं के लिए पूज्यश्री दीपकभाई की हाजिरी में डिब्बापार्टी और हलके-फुलके सत्संग का विशेष कार्यक्रम रखा गया। स्थानिक महात्माओं ने उल्लासपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया।

२७ मई : सीमंधर सिटी के पीछे अंबा टाउनशिप में अंबा स्कूल की नई बिल्डिंग का पूज्यश्री के शुभ हस्तों से उद्घाटन हुआ। इस साल नए सत्र से नई बिल्डिंग में स्कूल शुरू होगी। हाल में के.जी. से दसवीं कक्षा तक गुजराती माध्यम की स्कूल चल रही है। जिसमें लगभग ३५० विद्यार्थी पढ़ते हैं। भविष्य में अंग्रेजी माध्यम शुरू करने के भाव हैं। शाम ६ बजे पूज्यश्री ने यु.एस.ए. के सत्संग प्रवास के लिए वात्सल्य से प्रस्थान किया। सीमंधर सिटी के महात्मा दर्शन के लिए कतार में खड़े रहे और जगत् कल्याण का खूब कार्य हो ऐसी भावनाएँ प्रकट कीं।

२९ मई : अमरिका के वर्जीनिया में पहली बार आप्तपुत्र सत्संग आयोजित हुआ। उसमें लगभग सौ मुमुक्षुओं ने और साथ ही जिस मंदिर में कार्यक्रम हुआ था उसके ट्रस्टीओं ने भी भाग लेकर दादा के ज्ञान का परिचय प्राप्त किया।

३० मई से ४ जून : पूज्यश्री दीपकभाई के अमरिका में फिलाडेलिफ्या में पहली बार आयोजित कार्यक्रम में शुरूआत के दो दिनों के दौरान पुराने महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ पिकनीक, फोटो सेशन, बैगरह में भाग लेकर प्राप्त हुए अमूल्य अवसर का लाभ लिया। बहुत सारे महात्मा दूर-दूर से, दूसरे राज्यों में से भी आए थे। उसके बाद सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ३२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। कार्यक्रम के अंत में स्थानिक महात्माओं ने मीनी गुरुपूर्णिमा मनाई गई हो, ऐसे आनंद का अनुभव किया।

६ से ८ जून : अमरिका के राले शहर में आयोजित हुए सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ४०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। स्थानिक महात्माओं ने बहुत बड़े पैमाने पर कार्यक्रम के लिए प्रचार किया था। उसके फल स्वरूप बहुत लोगों ने ज्ञान प्राप्त किया। ६ जून को शारलोट में भी आप्तपुत्र सत्संग आयोजित किया गया, जिसमें २०० मुमुक्षुओं ने दादा के ज्ञान का परिचय प्राप्त किया और राले पहुँचकर आत्मज्ञान प्राप्त किया।

९ से १० जून: जेक्शनविल में फ्लोरिडा और आसपास के विस्तार के पुराने महात्माओं को लाभ मिले, इस कारण शिविर का आयोजन किया गया था। लगभग ३०० महात्माओं ने भाग लिया था। पूज्यश्री के साथ बीच पर और क्रूझ में इनफोर्मल सत्संग हुए, उसमें महात्माओं ने खुद को परेशान करने वाले प्रश्न पूछे और ज्ञान संबंधी सुंदर अनुभव कहें।

११ जून : एप्ल कंपनी के आईफोन तथा आईपेड के लिए 'दादा भगवान' 'एप' (साप्टवर) आम जनता के लिए एपस्टोर पर निःशुल्क रखी गई।

आप्तसिंचन के दूसरे बेच के नौ साधक तीन वर्ष का अभ्यास क्रम पूरा करके हमेशा के लिए और तीसरे बेच के आठ साधक छः महिने की इन्टर्नशीप के लिए अडालज त्रिमंदिर संकुल में जगत् कल्याण के कार्य में जुड़ गए हैं।

१२ से १४ जून : अमरिका के बर्मिंगहाम शहर में पहली बार आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान १५६ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। बुल्कन पार्क में स्थानिक महात्माओं को पूज्यश्री की निशा में निकट रहने का अमूल्य अवसर मिला।

१६ से १८ जून : शिकागो में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान २१५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। शिकागो के सीमाचिह्न समान सिअर्स टावर, जो अब विलिस टावर के नाम से पहचाना जाता है, उसकी पूज्यश्री ने स्थानिक महात्माओं के साथ मुलाकात ली। इस तरह शिकागो के महात्मा-मुमुक्षुओं को पूज्यश्री के साथ इनफोर्मल समय बिताने का अच्छा मौका मिला। परम पूज्य दादा भगवान ने भी अपने अमरिका सत्संग प्रवास के समय इस टावर की मुलाकात ली थी और उन्होंने उस समय असह्य ठंड के कारण जीवन में एक ही बार पतलून (पेन्ट) पहनी थी।

१७वीं जून से आप्तसिंचन के साधक भाईओं के पाँचवें बेच में दस साधक भादरण में और साधक बहनों के दूसरे बेच में १५ साधिकाएँ दादा दर्शन, अहमदाबाद में प्रशिक्षण हेतु शामिल हुए।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरु माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

डोंगरगढ़	दिनांक : 27 जुलाई,	समय: शाम 4 से 6	संपर्क : 9425247005
स्थल :	श्री मारवाड़ी धर्मशाला, डोंगरगढ़.		
भिलाई	दिनांक : 28 जुलाई,	समय: शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9827481336
स्थल :	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा बोटर टेन्क के पास, (मैत्री गार्डन चौक), भिलाई.		
रायपुर	दिनांक : 29 जुलाई,	समय: शाम 5 से 7	संपर्क : 9329644433
स्थल :	महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय आडिटोरियम, राजभवन के पास, रायपुर.		
गुड़गाँव	दिनांक : 25 अगस्त,	समय: शाम 6 से 8	संपर्क : 9810307602
स्थल :	सिद्धेश्वर स्कूल, गुरुद्वारा रोड, सब्जी मंडी के पास, गुड़गाँव.		
दिल्ली	दिनांक : 26 अगस्त,	समय: सुबह 10-30 से 12-30	संपर्क : 9811279979
स्थल :	लौरेल हाई स्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा.		
गाजियाबाद	दिनांक : 26 अगस्त,	समय: शाम 5 से 7-30	संपर्क : 9966738972
स्थल :	सेक्टर-17, ई-ब्लॉक कोनार्क एवन्यु, ई-ब्लॉक सेन्ट्रल पार्क, वसुंधरा, गाजियाबाद.		
मेरठ	दिनांक : 27 अगस्त,	समय: शाम 6 से 8	संपर्क : 9410607553
स्थल :	पीपीपी कोन्फरन्स होल, दास मोटर के पास, आबु लेन, मेरठ.		

पूज्य नीरुमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+ 'सोहम' पर हर रोज दोपहर १-३० से २, शाम ६-३० से ७ (रिपीट) (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन-गिरनार' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
	+ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में)
	+ 'दूरदर्शन-सप्तगिरि' पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (तेलुगु में)
USA	+ 'TV Asia' पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)
USA-UK	+ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)
Europe	+ 'वीनस' (स्काय प्लेटफार्म-चैनल 805) पर हर रोज रात १० से ११ (हिन्दी में)
+ समग्र विश्व में (भारत और यु.एस.ए. के अलावा) सोनी टीवी पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)	

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+ 'दूरदर्शन' पर हर बुध-गुरु-शुक्र सुबह ९ से ९-३० (हिन्दी में) - नई दृष्टि, नई राह
	+ 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-५० (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन' डीडी-गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
	+ 'दूरदर्शन-सहाद्रि' पर सुबह ७-३० से ८ (सोम-मंगल-गुरु-शनि), सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध-शुक्र) (मराठी में)
	+ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में)
+ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'SAHARA ONE' पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)	
USA-UK	+ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)
मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद (दादा दर्शन): (079) 27540408, बडोदरा (दादा मंदिर): (0265)2414142, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885 यु.के.: +44-7956476253, यु.एस.ए.: +1-877-505-3232, आस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063	

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

मेलबोर्न

दि. २४ जुलाई (मंगल), शाम ७ से ९ - सत्संग तथा २५ जुलाई (बुध), शाम ६ से ९ - ज्ञानविधि
स्थल : साईबाबा मंदिर, 32, हेली एवन्यु, केम्बरवेल, विक्टोरिया-3125, आस्ट्रेलिया. संपर्क : +61 433059550

पर्थ

दि. २८ जुलाई (शनि), शाम ४ से ७ - ज्ञानविधि तथा २९ जुलाई (रवि), शाम ४ से ६-३० - सत्संग
स्थल : जेविश कम्युनिटी सेन्टर, 61 वुडरो एवन्यु, योकीन WA- 6060, आस्ट्रेलिया. संपर्क : +61 430148386

अडालज त्रिमंदिर

दि. २ अगस्त (गुरु), सुबह ९-३० से १२ - रक्षाबंधन के अवसर पर दर्शन-भक्ति

दि. १० अगस्त (शुक्र), रात १० से १२ - जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति

दि. ११ अगस्त (शनि), शाम ४-३० से ७ - सत्संग तथा १२ अगस्त (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - ज्ञानविधि

पर्युषण पर्व पारायण - दि. १२-१९ सितम्बर तथा दर्शन - दि. २० सितम्बर २०१२

पर्युषण के दौरान आपवाणी-८ और क्लेश रहित जीवन (गुजराती) किताबों का वाचन और उन विषयों पर सत्संग पारायण होगा। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी।

दि. २० सितम्बर (गुरु) सुबह ९ बजे - दर्शन का विशेष कार्यक्रम

सूचना : यदि आप इस पारायण में भाग लेना चाहते हो, तो कृपया अपना रजिस्ट्रेशन दि. १९ अगस्त २०१२ तक अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर अवश्य करवाएँ। यदि आपके नजदिकी क्षेत्र में कोई सेन्टर नहीं है, तो आप अडालज त्रिमंदिर के रजिस्ट्रेशन विभाग के फोन नं. 079-39830400 (सुबह ९ से शाम ७) पर रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

हैदराबाद

दि. १७-१८ अगस्त (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९-सत्संग तथा १९ अगस्त (रवि), शाम ५-३० से ९-ज्ञानविधि

स्थल : भारतीय विद्या भवन, 5/9/1105, बशीर बाग, किंग कोठी रोड, हैदराबाद-२९. संपर्क : 9989841786

बैंगलोर

दि. २१ अगस्त (मंगल), शाम ६-३० से ९ - सत्संग तथा २२ अगस्त (बुध), शाम ६ से ९ - ज्ञानविधि

स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी.रोड, बैंगलोर-२. संपर्क : 9590979099

औरंगाबाद

दि. ६ अक्तूबर (शनि) - शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा ७ अक्तूबर (रवि), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि

स्थल : संत एकनाथ मंदिर, उस्मानपुरा, औरंगाबाद. संपर्क : 8308008897

जयपुर

दि. ९ अक्तूबर (मंगल) - शाम ६ से ८-३० - सत्संग तथा १० अक्तूबर (बुध), शाम ५ से ८-३० - ज्ञानविधि

स्थल : उत्सव होल, पी-१०, सेक्टर-२, विद्याधरनगर, जयपुर. संपर्क : 9461905465

दिल्ली

दि. १२-१३ अक्तूबर (शुक्र-शनि)-शाम ६ से ८-३०- सत्संग तथा १४ अक्तूबर (रवि), शाम ४-३० से ८-ज्ञानविधि

स्थल : लौरेल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा. संपर्क : 9811488263

पूज्य दीपकभाई का आफ्रिका-दुबई सत्संग प्रवास : दि. २३ अक्तूबर से ११ नवम्बर, २०१२

जुलाई २०१२
वर्ष - ७, अंक - ९
अखंड क्रमांक - ८१

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD, P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

तप से प्रकट हो आत्मऐश्वर्य

तप की बात आज निकली न, तो एक बार इस तप की बात पकड़ लो। तप का पुरुषार्थ शुरू कर दो। महावीर भगवान ने इसे तप कहा है। मैंने भी यही कहा है, लेकिन लोग ऐसा समझते हैं कि बाहर के तप किए बिना मोक्ष में कैसे जा सकते हैं? ऐसा अंतर तप कराने वाला कौन होगा? इसीलिए तप की बातें हम ज्यादा नहीं बताते, कभी-कभी ही ऐसी बात कहते हैं। (क्योंकि) मनुष्य की विसात नहीं है। यह तो सब्जी बिगड़ गई हो तो पूरे दिन किच-किच करता रहता है। सम्भाव से निकाल यानी क्या? तप करना। तप करने से बदले में कितना बड़ा ऐश्वर्य प्रकट होता है। इस ओर का (रिलेटिव का) जितना जाने देते हो, उतना ही बड़ा साम्राज्य (रियल में) मिलता है। यह तो जिसके पास यह ज्ञान है, उसीसे ये सब कह सकते हैं और अंतर तप भी वही कर सकता है। दूसरा कोई कर भी नहीं सकता न!

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.